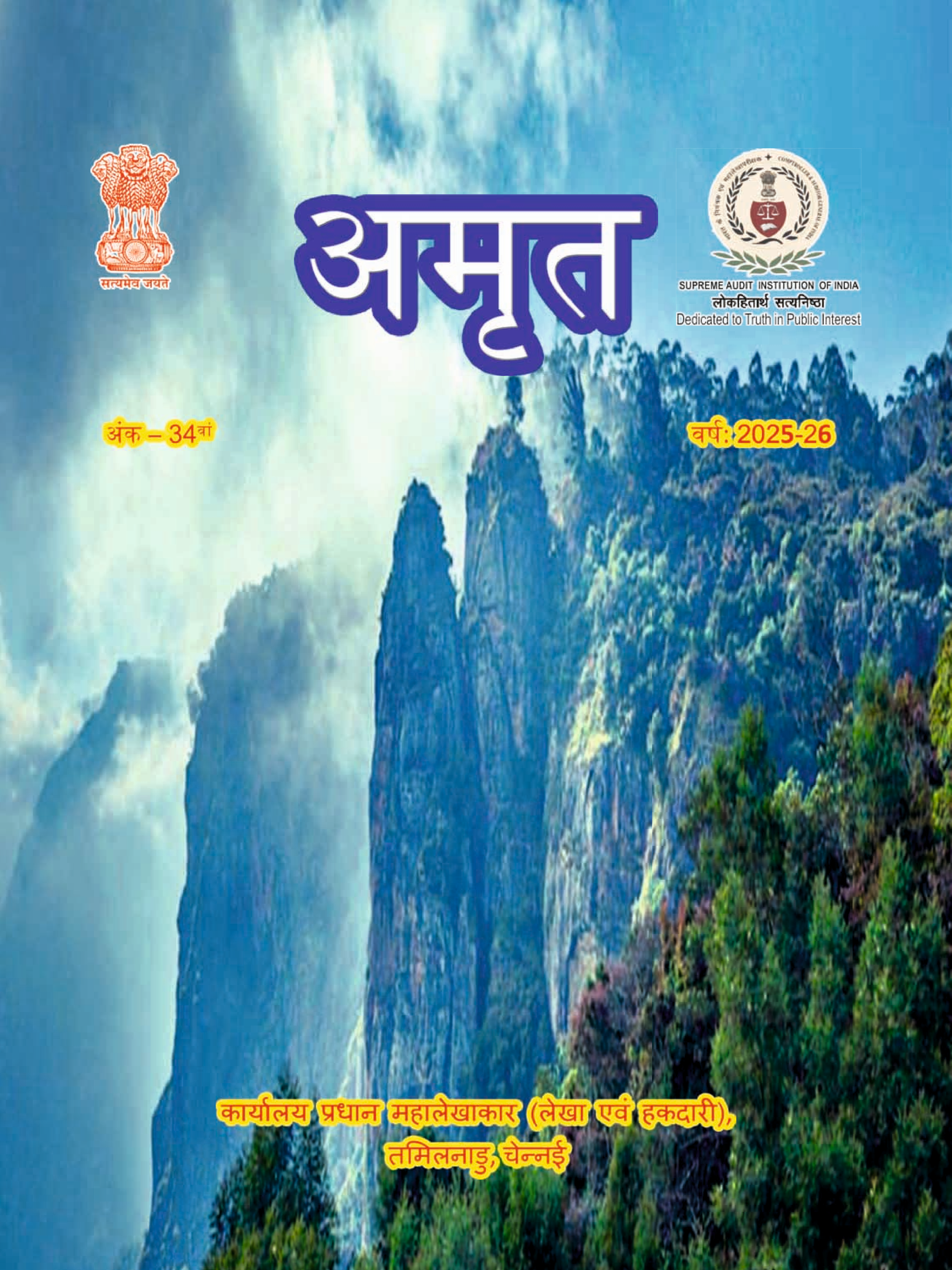

सत्यमेव जयते

अमृत

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अंक – 34वां

वर्ष: 2025-26

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
तमिलनाडु, चेन्नई

भारत के उप नियंत्रक महालेखापरीक्षक श्री जयंत सिन्हा (गसब) जी का स्वागत करते उच्चाधिकारीगण

अमृत परिवार

प्रधान संरक्षक	
सुश्री अनिम चेरियन *प्रधान महालेखाकार*	
परामर्शदात्री समिति	
	सुश्री सुबरंजनी एस.आर. *वरिष्ठ उप महालेखाकार,* *प्रशासन*
	सुश्री विजया पी. *उप महालेखाकार,* *पेंशन*
	श्री सौरव रमेश *उप महालेखाकार,* *लेखा*
संपादक मंडल	
	सुश्री स्वाति कुमार *सहायक निदेशक*
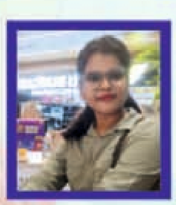	सुश्री सबिता साव *कनिष्ठ अनुवादक*

प्रकाशन अमृत (विभागीय छमाही हिंदी पत्रिका)	
प्रकाशक कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), तमिलनाडु, **361, अन्ना सालै, तेनामपेट, चेन्नई- 600 018** टेलीफ़ोन नं.: 044-24324530 फ़ैक्स नं.: 044-24320562 ई–मेल: **agaetamilnadu@cag.gov.in**	
अंक – 34 वां	वर्ष **2025-26** (प्रथम अंक)
मूल्य राजभाषा के प्रति निष्ठा	मुद्रक जया ग्राफिक्स, चेन्नई
अस्वीकरण- रचनाकारों के विचार उनके व्यक्तिगत विचार हैं। उनसे प्रधान संरक्षक, परामर्शदात्री समिति तथा संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।	

मुख्य पृष्ठ परिचय

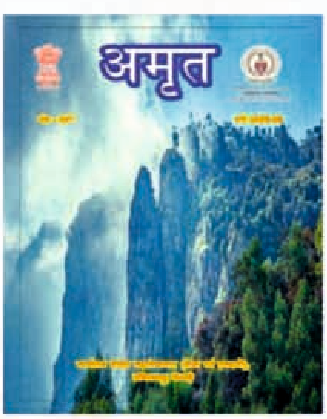

कोडैकनाल- तमिलनाडु का प्रसिद्ध हिल स्टेशन है, जो अपने-आप में अनुपम है। ये दो शिलाएँ कोडैकनाल की पहचान हैं। हिल स्टेशनों के राजकुमार के रूप में भी जाना जाता है। कोडाइकनाल में "दो चट्टानें" वास्तव में पिलर रॉक्स हैं, जो तीन विशाल ग्रेनाइट चट्टानें हैं जो ज़मीन से लगभग 400 फीट ऊपर उठती हैं और एक खंभे की तरह दिखती हैं। ये अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध हैं। पिलर रॉक्स डेविल्स किचन के पास स्थित हैं, जो एक और प्राकृतिक गुफ़ाओं का समूह है।

कोडैकनाल में पिलर रॉक्स का भ्रमण करना पर्यटकों के लिए एक अनोखा अनुभव प्रदान करता है।

संदेश

सुश्री अनिम चेरियन
प्रधान महालेखाकार

स्वतंत्र भारत ने अपना शासन अपनी भाषा में चलाने के लिए 14 सितम्बर , 1949 को राजभाषा के रूप में हिन्दी को घोषित किया । जिस प्रकार राष्ट्रीय प्रतीकों का महत्व है, स्वतंत्र देश के लिए संघ की राजभाषा का भी महत्व है और हमारा कर्त्तव्य यह है कि हिन्दी के प्रयोग को और भी बढ़ाएं । कर्त्तव्य परायणता व आपसी सहयोग की भावना से कार्य करने की गति बढ़ेगी, और इससे राष्ट्रीयता का सूत्र अवश्य मज़बूत होगा । राजभाषा कार्यान्वयन में हमारे कार्यालय ने बहुत अच्छी प्रगति दिखाई है । हमारे कार्यालय के कर्मचारियों को उनके कार्य के लिए मैं धन्यवाद देती हूँ । हमारे कार्यालय की गृह पत्रिका "अमृत" का 34 वाँ अंक पाठकों के समक्ष रखने में मुझे बहुत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है ।

इस पत्रिका के प्रकाशन में जिन्होंने अपने बहुमूल्य सेवाएँ दी हैं उन सभी को मैं हार्दिक धन्यवाद देती हूँ । मुझे विश्वास है कि भविष्य में भी हमारी "अमृत" पत्रिका और भी प्रगति के पथ पर अग्रसर होगी ।

जय हिंद!

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचनाएँ/विषय	रचनाकार	पृ.सं.
1.	राजभाषा विभाग के 'स्वर्ण जयंती समारोह' के अवसर पर माननीय गृह मंत्री जी का संदेश		7
2.	राजभाषा प्रतिज्ञा		10
3.	संदेश	वरिष्ठ उप महालेखाकार/प्रशासन	11
4.	संदेश	उप महालेखाकार/ पेंशन	12
5.	संदेश	उप महालेखाकार/लेखा	13
6.	संपादकों की कलम से	संपादक मंडल	14
7.	अनमोल पत्र		15
8.	घर से दूर नौकरी - एक संघर्ष	श्री आयुष कुमार	16
9.	हिंदी कार्मिक की सेवानिवृत्ति	सुश्री स्वाति कुमार	18
10.	बारिश का इंतजार	सुश्री वंदना के.	19
11.	महाकुंभ के दौरान प्रयागराज	श्रीमती लता सुंदर	22
12.	मैं सवरना चाहती हूँ।	सुश्री माधवी तोमर	26
13.	ए जिंदगी	सुश्री माधवी तोमर	27
14.	नूर- ए – मुस्कान	श्री शशिशेखर	28
15.	खुशी है...	सुश्री तनु शर्मा	29
16.	तनाव एवं मानसिक बीमारियाँ	श्री अजयनाथ त्रिपाठी	32
17.	दादा- दादी	सुश्री ज्योति वर्मा	34
18.	कलयुग अमृतवाणी	सुश्री ज्योति वर्मा	35
19.	देश में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा	श्री शिव जी पांडे	36
20.	ऊटी की यात्रा	श्री टीकम चन्द्र सैनी	38
21.	भावनाओं की परिषद:	सुश्री विजयलक्ष्मी शंकर	41
22.	बिहार के पहले मुख्यमंत्री.......	श्री दिव्यांशु	44
23.	काबिलियत	श्री मुकेश कुमार	46
24.	रामेश्वरम की यात्रा	श्री शशिकान्त कुमार	48
25.	मैं बढ़ा ही जा रहा हूं	श्री शिव जी पांडे	52
26.	प्राकृतिक सौंदर्य और उसका संरक्षण	सुश्री अंजिता अमन	54
27.	हमारे कार्यालय के खिलाड़ियों की उपलब्धियाँ (सुश्री जे. शार्लोट देवप्रिया)		56
28.	तस्वीरें - कार्यालय में संपन्न कल्याण गतिविधियाँ, कार्मिकों की उपलब्धियाँ, हिंदी पखवाड़ा के कार्यक्रम ।		57

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने 26.06.2025 को नई दिल्ली में राजभाषा विभाग के 'स्वर्ण जयंती समारोह' को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित किया –

अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि भारत की आज़ादी की शताब्दी के समय देश के स्वाभिमान के पुनर्जागरण के सभी प्रयासों में 1975 से 2025 तक की राजभाषा विभाग की 50 साल की इस यात्रा को स्वर्णिम अक्षरों में अंकित किया जाएगा। राजभाषा विभाग की स्थापना का उद्देश्य था कि देश का शासन नागरिकों की भाषा में चले और प्रशासन में भारतीय भाषाओं का उपयोग कर देश के आत्मसम्मान को जागृत किया जाए। कोई भी देश अपनी भाषा के बिना अपनी संस्कृति, साहित्य, इतिहास और सामाजिक संस्कार को चिरंजीव नहीं रख सकता। अपनी संस्कृति के आधार पर आत्मसम्मान के साथ आगे बढ़ने के लिए देश का शासन उसकी अपनी भाषाओं में होना चाहिए। इस महान उद्देश्य के साथ राजभाषा विभाग की शुरूआत हुई थी और 50 वर्ष की यह यात्रा आज एक ऐसे मुकाम पर खड़ी है जब हमें इसे आगे ले जाने का प्रयास और पूरा रास्ता तय करना है। संघर्ष, साधना और संकल्प के आधार पर इस 50 साल की यात्रा को हम सबने मिलकर पूरा किया है।

श्री अमित शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा दिए गए पंच प्रण में गुलामी की मानसिकता से मुक्ति बहुत महत्वपूर्ण प्रण है। जब तक व्यक्ति अपनी भाषा पर गौरव नहीं करता, अभिव्यक्ति, सोच, विश्लेषण और निर्णय लेने की क्षमता को अपनी भाषा में नहीं गढ़ता, तब तक हम गुलामी की मानसिकता से मुक्त नहीं हो सकते। भाषा सिर्फ संवाद का माध्यम नहीं बल्कि राष्ट्र की आत्मा होती है। हमारी जड़ें, परंपराएं, इतिहास, पहचान और जीवन संस्कृति भाषा से कटकर आगे नहीं बढ़ सकते और भाषाओं को जीवंत रखना और समृद्ध करना बहुत ज़रूरी है।

हमें आने वाले दिनों में सभी भारतीय भाषाओं और विशेषकर राजभाषा के लिए ये सभी प्रयास करने चाहिएं।

माननीय प्रधान मंत्री जी ने विगत 11 साल में एक भारत, श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम की शुरूआत की और इसके अंतर्गत काशी-तमिल संगमम, काशी-तेलुगू संगमम, सौराष्ट्र-तमिल संगमम, शाश्वत मिथिला महोत्सव और भाषा संगम ने देश की एकता को मज़बूत करने का एक बहुत अच्छा मंच प्रदान किया है। उन्होंने कहा कि आज भाषा संगमम की पहल पर हर स्कूल में छात्रों को बोलचाल के 100 वाक्य संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त 22 भाषाओं में सिखाने का कार्यक्रम चलाया जा रहा है। भाषा संगमम द्वारा शुरू की गई यह पहल आने वाले दिनों में भारतीय भाषाओं की संजीवनी बन कर एक वट वृक्ष के रूप में आगे बढ़ेगी।

मंत्री जी ने कहा कि राजभाषा विभाग ने हिंदी शब्दसिंधु की रचना की है जो राजभाषा को स्वीकृत, लचीली और संपूर्ण बनाने का एक बहुत बड़ा प्रयास है। किसी भी भाषा को समृद्ध करने से परहेज़ नही होना चाहिए और आम बोलचाल के शब्द, चाहे किसी भी भाषा के हों, एक बार हिंदी शब्दसिंधु में आ जाते हैं तो आने वाले दिनों में वो शब्द हिंदी के शब्द के रूप में ही प्रतिष्ठित होंगे। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि हिंदी शब्दसिंधु आने वाले दिनों में हिंदी को न सिर्फ लचीली और समृद्ध बनाएगा बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं से भी जोड़ेगा।

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने कहा कि इसी वर्ष भारतीय भाषा अनुभाग की भी स्थापना की गई है। हिंदी किसी भी भारतीय भाषा की विरोधी नहीं हो सकती। हिंदी सभी भारतीय भाषाओं की सखी है और हिंदी और भारतीय भाषाएं मिलकर ही हमारे आत्मगौरव के उत्थान के कार्यक्रम को अंतिम लक्ष्य तक ले जा सकती हैं। भारतीय भाषा अनुभाग हर राज्य को सहायता करेगा कि राज्यों और भारत सरकार का प्रशासन भारतीय भाषाओं के आधार पर ही हो। हमारे देश में 12 भाषाओं में तकनीकी शिक्षा की शुरूआत हुई है। मध्य प्रदेश ने हिंदी में मेडिकल शिक्षा की शुरूआत की है, पूरा पाठ्यक्रम बनाया है और आने वाले दिनों में अन्य राज्य भी भी मेडिकल शिक्षा का पूरा पाठ्यक्रम अपनी भाषाओं में तैयार कर बच्चों को सुविधा उपलब्ध कराएंगे। सभी राज्य इंजीनियरिंग और मेडिकल शिक्षा अपने राज्य की भाषा में उपलब्ध कराने का प्रबंध करें।

उन्होंने कहा कि कोई भी राज्य अपनी मातृभाषा की उपेक्षा कर कभी महान नहीं बन सकता और सरकार ने अपनी भाषाओं को सम्मानित और प्रतिष्ठित करने के लिए अनेक प्रयास किए हैं। मराठी, पाली, प्राकृत, असमिया और बंगाली को शास्त्रीय भाषाओं के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। आज भारत में संस्कृत, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, ओडिया, मराठी, पाली, प्राकृत, असमिया और बंगाली के रूप में 11 शास्त्रीय भाषाएं उपलब्ध हैं। पूरे विश्व में ऐसा कोई देश नहीं है जिसके

पास 11 शास्त्रीय भाषाएं हैं। उन्होंने कहा कि 2020 में संस्कृत के लिए तीन केन्द्रीय विद्यालय स्थापित किए गए और अनुसंधान और अनुवाद के लिए केन्द्रीय शास्त्रीय तमिल संस्थान की स्थापना की गई। संसदीय राजभाषा समिति ने पिछले 4 वर्षों में 3 खंड प्रकाशित किए हैं। कोरोना के बावजूद 3 खंड प्रकाशित किए गए हैं। उन्होंने कहा कि 2014 तक कुल 9 खंड प्रकाशित हुए थे और अब 2019 के बाद 3 खंड प्रकाशित हुए हैं जो एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। कोविड के दौरान केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान और केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा ई-प्रशिक्षण के माध्यम से हिंदी भाषा, हिंदी टंकण, हिंदी आशुलिपि और हिंदी अनुवाद में प्रशिक्षण प्रारंभ किया गया था जिसे अब नियमित करने का निर्णय लिया गया है।

केन्द्रीय गृह मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी जी 2020 में नई शिक्षा नीति लाए। उन्होंने कहा कि किसी भी राष्ट्र के लिए शिक्षा नीति, आने वाले 50 साल में देश किस रास्ते पर आगे बढ़ेगा, इसकी परिचायक होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में कक्षा 5 और कक्षा 8 तक मातृभाषा और स्थानीय भाषा पढ़ाने पर बल दिया गया है। हमारी भाषाओं के विकास का समर्थन नीतिगत रूप से किया गया है और 22 राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों में प्राथमिक कक्षा की 104 पुस्तकें भी शुरू की गई हैं। भारतीय सांकेतिक भाषा के लिए कक्षा 1 से 12 तक के लिए अनुवादित शिक्षण सामग्री और पुस्तकें उपलब्ध करा दी गई हैं। 200 से अधिक टीवी चैनल्स 29 भाषाओं में शैक्षिक सामग्री प्रदान करते हैं और दीक्षा प्लेटफॉर्म पर 133 बोलियों में 3 लाख 66 हज़ार से अधिक ई-सामग्री उपलब्ध कराई है जिनमें 7 विदेशी भाषाएं शामिल हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति की यह पहल राजभाषा और भारतीय भाषाओं को मज़बूत करने में सहायक सिद्ध होगा।

गृह मंत्री ने यह भी कहा कि केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बलों (CAPFs) में हवलदार पद के लिए परीक्षा अब भारतीय भाषाओं में आयोजित की जाती है और 95 प्रतिशत परीक्षार्थी अपनी मातृभाषा में परीक्षा दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि इससे पता चलता है कि आने वाले दिनों में भारतीय भाषाओं का भविष्य बहुत उज्ज्वल है।

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से: प्रशिक्षण और प्राइज़ से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा - हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएँगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय हिंद !!

संदेश

सुश्री सुबरंजनी एस.आर.
वरिष्ठ उप महालेखाकार, प्रशासन

किसी भी भाषा के विकास में पत्रिकाओं की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इस कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका 'अमृत' हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार करने में अहम् भूमिका तो निभाती ही है, साथ-ही-साथ हमारे अधिकारियों और कर्मचारियों की साहित्यिक अभिरुचि को भी प्रकाश में लाने का अवसर प्रदान करती है। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) हिंदी गृह पत्रिका के प्रकाशन की परम्परा को बनाए रखते हुए पत्रिका का 34वां अंक प्रकाशित कर रहा है। मैं पत्रिका के संपादक मंडल को बधाई देती हूँ और इसकी अनवरत सफलता की कामना करती हूँ।

जय हिंद!

संदेश

सुश्री विजया पी.
उप महालेखाकार, पेंशन

भाषा केवल विचार-विनिमय का माध्यम ही नही है बल्कि यह अपने आप में एक संस्कृति है। कई विख्यात साहित्यकारों ने हिंदी भाषा को राष्ट्रव्यापी स्वरूप दिलाने में अपना समर्थन व सहयोग दिया है। हिंदी आज अपनी सरलता के कारण आम जनता के बीच तेजी से लोकप्रिय बनती जा रही है। हिंदी बोलचाल से कामकाज की भाषा तक धीरे ही सही पर निश्चित रूप से आगे बढ़ रही है। देश को एकसूत्र में बाँधने तथा उसकी अखंडता को कायम रखने में हिंदी भाषा की भूमिका काफी सार्थक रही है। देश की अधिकतम जनता द्वारा बोली व समझी जाने वाली हिंदी को संविधान में संघ की राजभाषा का दर्जा दिया गया है। कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) में राजभाषा की उतरोत्तर प्रगति में 'अमृत' की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। मैं, इस पत्रिका के 34 वें अंक के प्रकाशन पर रचनाकारों तथा संपादक मंडल को बधाई देती हूँ।

जय हिंद!

संदेश

श्री सौरव रमेश
उप महालेखाकार, लेखा

मैं हमारे कार्यालय की गृह पत्रिका "अमृत" का 34वाँ अंक के प्रकाशन की सराहना करता हूँ। हिंदी के प्रचार-प्रसार को और लोकप्रिय बनाने हेतु कार्यालयीन पत्रिका अपना अमूल्य योगदान देती है। पत्रिका, कार्यालय के कार्मिकों की साहित्यिक प्रतिभा को निखारने का मंच प्रदान करती है। मैं इस पत्रिका में अपना सहयोग और रचनाएँ देने वाले अधिकारियों व कर्मचारियों, विशेषकर संपादक मंडल को साधुवाद देता हूँ। इस पत्रिका के लिए लेख देने वाले कर्मचारियों ने यह सिद्ध कर दिया कि इस कार्यालय में राजभाषा नीति का कार्यान्वयन प्रभावकारी है। मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में भी हमारी पत्रिका और भी उन्नति की ओर बढ़ेगी ।

जय हिंद!

संपादकीय.........

किसी भी भाषा का महत्व और अस्तित्व उसकी उपयोगिता और व्यावहारिकता पर आधारित होती है। भाषा के बिना कोई संस्कृति, सभ्यता या परंपरा जीवित नहीं रह सकती। हिंदी भाषा, राष्ट्रीय जनसंपर्क की भाषा के रूप में प्रचलित है ।

जैसे नदियों के संगम से बनता है सागर,

वैसे भाषाओं की मिश्री-सी बोली है हिंदी।

पढ़ोगे हिंदी तो पाओगे निज बोली उसमें

लगेगी नहीं मन में कि ये कोई नई है।

कहते हैं भाषा को प्रगति के पथ पर आगे बढ़ाने का दायित्व नागरिकों, साहित्यकारों, कला, मीडिया, सरकार का है। और इस नाते राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने में क्रेंद्र सरकारी कार्मिक भी उत्तरदायी हैं। भारत के संविधान में हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में मान्यता दी गई है, अत : हमारा कर्तव्य है कि पूरे सम्मान और गर्व के साथ हम हिंदी को अपनाएं। अमृत पत्रिका भाषा की अभिव्यक्ति का साधन तो है ही, साथ ही कार्यालयीन गतिविधियों की झलक, कार्मिकों की खेलकूद प्रतिभाएं, कला प्रदर्शन का भी श्रेष्ठतम स्त्रोत है। पत्रिका, कार्यालय के नए-नए साहित्यकारों की रचनात्मक प्रतिभा मुखारित करने में सहायक होती है।

आशा है कि पत्रिका को और अधिक रुचिकर बनाने, रचनाकारों को प्रोत्साहित करने के लिए आप पाठकगण अपने अमूल्य सुझाव देकर हमें अनुग्रहित करेंगे । सादर ।

जय हिंद!

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य
ऑडिट भवन, आई.पी. एस्टेट
नई दिल्ली-110002

OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL
OF AUDIT INDUSTRY AND CORPORATE
AFFAIRS AUDIT BHAWAN, I.P. ESTATE
NEW DELHI-110002

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

दिनांक / DATE ....

सं. प्रशा/रा.भा./बाह्य पत्रि./23/2023-24/75 दिनांक:14.11.2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी कक्ष
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय
361, अन्ना सलाई, तेनाम्पेट, चेन्नई - 600 018

22 NOV 2024

विषय: कार्यालय की हिंदी गृह-पत्रिका "अमृत" के 33वें अंक का प्रेषण।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित की गई हिंदी पत्रिका "अमृत" के 33वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान में कार्यालय के कार्मिकों द्वारा किया प्रयास अत्यंत सराहनीय है। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक है। सुश्री रंजनी सिवकुमार, वरिष्ठ लेखा अधिकारी की "हिंदी कक्ष", श्री सौरभ शर्मा, लेखाकार की "मातृ दिवस", सुश्री पुष्पा शेषाद्री, वरिष्ठ लेखा अधिकारी की "ईमानदारी एक जीवन शैली" रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

संपादक एवं हिंदी अधिकारी

28 NOV 2024

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा - वाणिज्यिक
का कार्यालय बेंगलोर-560001
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF
AUDIT DEFENCE- COMMERCIAL, BENGALURU-560001.

हि.प्रशा.2024/25/1149 दिनांक - 19.11.24

सेवा में,

हिंदी अधिकारी / राजभाषा अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखा एवं हकदारी)
361, अण्णा सालै, तेनाम्पेट, चेन्नै-600018

21 NOV 2024

विषय:- प्रशंसा पत्र।

महोदय /महोदया,

आपके कार्यालय की हिन्दी ई-पत्रिका अमृत के 33वें अंक की प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका में सम्मलित सभी रचनाऐं पठनीय एव प्रशंसनीय हैं। विशेष रूप से श्री सौरभ शर्मा का लेख "मातृ दिवस", सुश्री अंजिता अमन का लेख "माता-पिता", सुश्री स्वाति कुमार का लेख "अनमोल जीवन", सुश्री वियजलक्ष्मी शंकर का लेख "नारी और प्रकृति" आदि रोचक व ज्ञानवर्धक है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाऐं।

धन्यवाद,

भवदीया,
स्वाति
19/11/24
हिन्दी अधिकारी

22 NOV 2024

OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL
AUDIT (II),
WEST BENGAL

संख्या - हिंदी कक्ष/पत्रिका पावती/115
No. - H.C/P.P/

दिनांक- 11/11/24
111124

सेवा में,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिन्दी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), तमिलनाडु
361, अन्ना सलाई, तेनाम्पेट, चेन्नई-600018

To,
The Senior Accounts Officer/Hindi
Office of the Principal Accountant General (Accounts & Entitlement),
Tamil Nadu 361, Anna Salai, Teynampet, Chennai-600018

विषय: कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'अमृत' के 33वें अंक के प्रतिभाव प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित 'अमृत' के 33वें अंक के ई-पत्रिका की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक हैं। साथ ही साथ पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं और लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएं अति उत्तम लगी वो हैं- परीक्षा, एक आह्वान, अनमोल जीवन, दफ्तर, नारी और प्रकृति, योग, माता-पिता, बची रहनी चाहिए तथा कर्म-धर्म का एक रूप आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिये बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,
सु. खान 11/11/24
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ हिंदी कक्ष

20 NOV 2024

Phone: (033) 2337-4916; FAX: (033) 2334-7854,
Email: agauwestbengal2@cag.gov.in

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय व्यय)
Office of the Director General of Audit (Central Expenditure)
इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली-110 002
Indraprastha Estate, New Delhi-110002

सं.प्र.का.अ/2-9/प्रशंसा पत्र/2024-25/ 828 दिनांक: 11.11.2024

सेवा में

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिन्दी)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
तमिलनाडु, 361, अन्ना सलाई, तेनाम्पेट,
चेन्नै - 600 018.

विषय- हिन्दी गृह पत्रिका "अमृत" के 33वें अंक के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय के पत्र सं. हिन्दी कक्ष/अमृत-33/2024-25/ दिनांक 24.10.2024 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिंदी पत्रिका **"अमृत"** के 33वें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट सुश्री उमा रघुनंदन का लेख, "भारत का स्कॉटलैंड-कूर्ग", सुश्री तनु शर्मा का लेख, "कर्म-धर्म का एक रूप", एवं सुश्री पुष्पा शेषाद्री का लेख, "ईमानदारी" बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख है।

इसके अतिरिक्त श्री राहुल कुमार महतो की कविता, "एक कवि तो हम भी हैं", सुश्री विजयलक्ष्मी शंकर की कविता, "नारी और प्रकृति", एवं श्री विवेक कुमार की कविता, "बची रहनी चाहिए" पठनीय है।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र है। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया

पूजा
11/11
हिंदी अधिकारी

19 NOV 2024

घर से दूर नौकरी - एक संघर्ष

श्री आयुष कुमार
लेखाकार

हम सभी बचपन में कभी न कभी इस ख्यालों से गुजरे होंगें जब हमें लगता था कि घर से निकलकर जिंदगी बहुत ही खुबसुरत होगी, जब हमारी नन्हीं आँखों को घर कि चारदीवारी में घुटती जिंदगी से कहीं दूर बड़े शहरों की चकाचौंध बहुत ही रोमांचक लगती थी और यह फितरत सामान्य भी है, इंसान को यह चीज हमेशा ज्यादा भाती है, जो चीज वास्तविकता से दूर कल्पनाओं में होती है।

घर से दूर नौकरी इसी कड़ी का एक पहलु है, जो जब तक कल्पनाओं में होता है, रोमांचकता के परम आयाम पर होता है पर जैसे ही वास्तविकता के पटल पर पहुँचता है, हमारी रोमांचकता धीरे-धीरे व्यवहारिकता में बदल जाती है।

जब कोई व्यक्ति अपनी ख्वाहिशों की पोटली लेकर घर की दहलीज पार कर एक नए सफर पर निकलता है तो एक नई अनजान दुनिया उसका इंतजार कर रही होती है। नया शहर, नई भाषा, नई संस्कृति अलग रहन सहन यह सब मिलकर एक चुनौतिपूर्ण वातावरण तैयार करते है। जिस वातावरण में न जाने उसे कितने भावनात्मक, सामाजिक और मानसिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है पर सच यह भी है कि जैसे-जैसे वह इन चुनौतियों का सामना करना सीख जाते है, उसका आत्मविश्वास उत्कृष्ठता की ओर बढ़ने लगता है।

नए शहर के नए घर में आजादी तो पुरी होती है पर न जाने क्यूं दिल घर की उन बंदिशों को याद कर मन ही मन मुस्कुराता है, अब उसे वह बंदिशें कैद नहीं बल्कि अपनों के प्रेम का बंधन लगने लगता है।

घर से दूर रहने पर एकाकीपन सबसे बड़ी चुनौती बनकर उभरती है, परिवार की कमी, माँ का प्यार, पिता की सीख, भाई बहन की शरारतें, दोस्तों के साथ बिताये पल, हर एक छोटी बड़ी चीज फिर बहुत खलती है।

यह नया शहर व्यक्ति को समय के जाल में इस तरह जकड़ती है कि बस वह बंधकर रह जाता है खुद से खाना बनाना, समय पर ऑफिस पहुँचना, अपना बजट संभालना अपनी छोटी बड़ी जरूरतें खुद समझना और सबसे बढ़कर इस अस्त व्यस्त दिनचर्या में अपनी सेहत का ध्यान रखना। इस व्यस्तता भरे दिनचर्या में सामंजस्य बिठाना सब के बस की बात नहीं होती।

कई लोग एसे होते है, जो इस दिनचर्या में सामंजस्य बिठानें में सफल हो जाते है, वक्त उनके जज्बातों पर हावी नहीं हो पाती और यह इस प्रतिस्पर्धा वाली दौर में कदम से कदम मिलाकर चलना सीख जाते है, और वक्त के साथ उनके व्यक्तित्व में निखार आ जाता है, उनमें आत्मविश्वास, समय प्रबंधन, संवाद कौशल और निर्णय लेने की क्षमता विकसित हो जाती है। यह क्षमता आगे चलकर उनके करियर और जीवन दोनों में मददगार साबित होता है। अतंतः व्यक्ति अपने बचपन के कल्पनाओं और वर्तमान के वास्तविकता के मध्य खुद को स्थापित कर लेता है और चाहकर भी पीछे मुड़कर नहीं देख पाता, समझदारी और परिपक्वता का लिबास ओढ़े बस दौड़ने लगता है तथाकथित 'समझदार' दुनिया के 'अव्यवस्थित' भीड़ में।

लेकिन वहीं कुछ लोग ऐसे भी होते है जो इस व्यस्तता भरे दिनचर्या में सामंजस्य बिठाने में सफल नहीं हो पाते, उनके मासुमियत भरे कंधे जिम्मेदारियों के बोझ तले दबने लगते है और वो वक्त के साथ पीछे छुटते चले जाते है और यहीं से उनके अकेलेपन और मानसिक तनाव की शुरूआत होती है। समय उनपर हावी होते चला जाता है और वह कमजोर। ऐसी स्थिति में परिवार, दोस्त अपने लोग ही सहारा हो सकते है। सोशल मीडिया के जरिए अपने प्रियजनों के संपर्क में रहना एक विकल्प तो हो सकता है परन्तु भौतिक उपस्थिति कि कोई तुलना नहीं होती, सोशल मीडिया हमारे भावनात्मक सहारे कि पुर्ति नहीं कर पाती। ऐसे स्थिति में जरूरी है कि व्यक्ति अपनों के संर्पक में रहे, समय समय पर अपने प्रियजनों से मिलते जुलते रहे और अपने वर्तमान को अपनाकर खुद पर विश्वास रखकर आगे बढ़े।

'घर से दूर नौकरी' एक मिश्रित अनुभव है जो एक ओर हमें नये जीवन के लिए तैयार करता है, तो वहीं दूसरी ओर हमें अपने प्रियजनों से दूर कर देता है। यह मिला-जुला अनुभव हमें सिखाता है कि कैसे संघर्षों के बीच भी मुस्कुराना है और अकेले रहकर भी खुद को मजबूत बनाना है। यह केवल एक नौकरी नहीं बल्कि 'जीवन की पूर्ण पाठशाला' होती है, जो समय के साथ हमें आत्मनिर्भर, जिम्मेदार और परिपक्व बनाती है।

हिंदी कार्मिक की सेवानिवृत्ति

सुश्री स्वाति कुमार
सहायक निदेशक (रा.भा.)

जीवन की आपा-धापी में
न जाने खुद को कहाँ खो दिए
इस दौड़ती-भागती जिंदगी में
अब साँस लेने की फुरसत आयी है।
ऑफिस में धारा 3(3) के अनुवादों
से लेकर हिंदी पखवाड़े तक
कभी रा.भा.का.स. की बैठक हेतु दौड़-भाग
तो कभी तिमाही रिपोर्ट हेतु बारंबार मांग।
कार्यशाला से कतराते कार्मिक,
तो कभी हिंदी कक्षाओं
से बचने हेतु खुद को छुपाते कार्मिक,
सभी को प्रेरित करने
और वार्षिक कार्यक्रम के अनुपालन में;
अब विराम आया है।
फाइलों की लड़ी और कंप्यूटर स्क्रीन
से निकलकर
अब है समय, स्वयं के उत्थान का
सुनहरे पलों को जीने का, बनाने का
कुछ अधूरे सपमों को पूरे करने का
तो कुछ अधूरे नातों को निभाने का।
अब न कोई अधिकारी न कोई कर्मचारी होगा
न बायोमेट्रिक का डर, न छुट्टी लेने का हिसाब होगा
न किसी की अनुमति न ही मंजूरी का झंझट होगा।
उड़ते परिंदों सा, मन पूरा आजाद होगा।
अब वक्त आया है:
खुद को तराशने का,
बड़ों की सी परिपक्वता से हटकर,
कुछ बचपन का नटखटपन अपनाने का,
कुछ नया सीखने-सीखाने का,
दोस्तों के साथ मस्ती करने का,
अपने परिवार संग हँसने-हँसाने का।
कार्यालयीन पत्रिका के संपादक पद से हटकर
स्वयं के संपादक बनने का।
'अमृत' का 'अमृतवाणी' बनाकर
सबको सुनाने का।
सेवानिवृत्ति है जीवन के
सबसे अनमोल पलों को जीने का,
हर एक क्षण को सृजनता देने का
और प्रकृति की गोद में झूमने का।
हिंदी के साधकों को बहुत पढ़ लिया
वक्त है खुद साधक बनने का।

बारिश का इंतजार

सुश्री वंदना के.
पी.रेवती / कल्याण अधिकारी की सुपुत्री

"मैं बारिश का इंतज़ार कर रही हूँ।"

12 साल से बारिश का इंतजार कर रही हूं और अब समय आ गया है।

---

12 साल पहले...

"उठो! काम का समय हो गया है, बारिश हो रही है।"

मैं जाग गयी और ज़मीन पर बारिश की आवाज़ सुनी।

आपने सोचा होगा कि मुझे सतह पर गिरती बारिश की बूंदों की हल्की-सी आवाज़ सुनाई देती होगी, या जब मैं बाहर जाती हूँ तो अपनी त्वचा पर बारिश की बूंदों का हल्का सा स्पर्श महसूस होता होगा, या शायद बारिश मेरी उंगलियों से फिसलकर टपकती होगी। लेकिन नहीं; जब मैं यहाँ, जहाँ मैं रहती हूँ, वरुण ग्रह (नेपच्यून) पर, तो हीरे बरसते हैं। सुंदर हीरे बरसते हैं जो बिल्कुल साफ़, स्फटिक(क्रिस्टल) जैसे साफ़ और पारदर्शी रूप से चमकते हैं।

बारिश हमेशा तेज़ होती है, त्वचा पर पड़ने पर दर्द होता है, और आसमान हमेशा काला रहता है। हीरे की बारिश में आप बिना सूट (पूरे शरीर को ढकने और बचाने के लिए बने

परिधान) के बाहर नहीं निकल सकते, न ही आपको ताज़गी महसूस होती है क्योंकि जब बारिश होती है, तो इसका मतलब है कि हमें काम करना है: बरसने वाले हीरे इकट्ठा करना। हर साल एक अंतरिक्ष यान सारे हीरे वापस धरती पर ले जाने के लिए आता है, एक ऐसी यात्रा जिसमें 12 साल लगते हैं।

मेरे माता-पिता 2038 में, हज़ारों अन्य लोगों के साथ पृथ्वी से नेपच्यून कॉलोनी में चले गए, जब उन्होंने हीरे के व्यापार के अवसर का लाभ उठाया, जहाँ वे हीरे वापस पृथ्वी पर भेजते थे। जो हीरे बरसते थे, उन्हें इकट्ठा किया जाता है, पैक किया जाता है और पृथ्वी पर भेजा जाता है, जहाँ से आने में 12 साल लगते हैं। मेरा जन्म 2044 में नेपच्यून पर हुआ था और मैंने अपने जीवन के सभी 17 साल यहीं बिताए हैं। नेपच्यून पर इतनी ठंड होती है कि गर्मियों में भी तापमान 0 से नीचे रहता है। हम सभी ने इंसुलेटेड शहर बनाए हैं और प्रेशराइज्ड केबिनों में रहते हैं। जब से मैं पैदा हुई हूँ, मैं ऐसे ही जीवन जी रही हूँ। लेकिन अब, मुझे पता है कि मैं अब इस तरह का जीवन नहीं जीना चाहती।

हमें स्कूल में पृथ्वी के बारे में पढ़ाया जाता है और तस्वीरें दिखाई जाती हैं। हम पृथ्वी पर रहने वाले लोगों के बारे में फ़िल्में भी देखते हैं। मैंने देखा है कि पृथ्वी पर लोग ज़्यादा खुश और संतुष्ट दिखते हैं, खासकर जब बारिश होती है। वे बारिश में खड़े होते हैं, अपनी त्वचा पर बारिश महसूस करते हैं, बारिश में चुंबन करते हैं, और बारिश में रोते भी हैं। वे बारिश में नाचते भी हैं! मैंने कई किताबों में पढ़ा है कि बारिश जीवन देती है, बारिश ताज़गी देती है और दिल को छू जाती है। मैंने कभी ऐसा अनुभव नहीं किया, इसलिए मेरे लिए, मेरा एकमात्र सपना पृथ्वी पर बारिश का अनुभव करना है। मैं बारिश का आनंद तब लेना चाहती हूँ जब बाहर धूप खिली हो, मेरे कपड़े पानी से भीगे हों और मेरी त्वचा टपकती बूंदों को महसूस कर रही हो।

मैंने निश्चय किया कि मैं वास्तव में बारिश, पानी की बारिश को महसूस करना चाहती हूँ, मैंने अंतरिक्ष यान भी लिया। एक अंतरिक्ष यान जो वर्ष में एक बार आता है, लेकिन पृथ्वी तक पहुँचने में 12 वर्ष का समय लेता है।

अब ....।

पृथ्वी पर जाने में 12 साल लग गए, यानी 12 साल से मैं यात्रा कर रही हूँ, अपने परिवार और दोस्तों से दूर। बस इसी पल के लिए। अब जब से मैं पृथ्वी पर आयी हूँ, मैं बारिश का

इंतज़ार कर रही हूँ।

मौसम पूर्वानुमान में कहा गया था कि आज बारिश होगी इसलिए मैं यहाँ बाग में हूँ ताकि बारिश शुरू हो सके।

जैसे ही बारिश की पहली बूँदें बरसने लगीं, मैंने अपनी त्वचा पर कोमल, कोमल, दिल को छू लेने वाली बारिश की बूँदें महसूस कीं। मैंने अपने हाथों से कुछ बूँदें पकड़ीं और उन्हें पिया। यह अब तक का सबसे अच्छा पानी था जो मैंने चखा है। जैसे ही बारिश तेज़ होने लगी, मुझे लगा कि तेज़ बूँदें मेरे कपड़ों को भिगो रही हैं। यह ताज़गी और सुकून का एहसास था। मैं सचमुच भावुक हो गयी कि कुछ प्राकृतिक और सरल चीज़ किसी को भी जीवंत महसूस करा सकती है। मेरे गालों पर आँसू बह निकले, लेकिन बारिश ने उसे छुपा लिया। मैं वहाँ बारिश में बैठी रहा और अपनी त्वचा पर बारिश की बूंदों के झुनझुने स्पर्श को तब तक महसूस करती रही जब तक बारिश बंद नहीं हो गई।

मैंने इसके लिए 12 साल इंतजार किया। और मेरे लिए, यह इंतजार मल्यवान था।

महाकुंभ के दौरान प्रयागराज की हमारी यात्रा

श्रीमती लता सुंदर
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

शुरू में, हमारा महाकुंभ में जाने का कोई इरादा नहीं था। समाचार चैनल भयावह खबरों से भरे पड़े थे- भगदड़, लापता लोग, भारी भीड़। लेकिन उन्होंने प्रयागराज में आगंतुकों की भारी आमद को संभालने के लिए किए गए प्रबंधों की भी प्रशंसा की।

इसी दौरान, अमेरिका से मेरी एक चचेरी बहन चेन्नई में मुझसे मिलने आई। वह प्रयागराज से लौटी ही थी और उसने संगम में पवित्र स्नान करने के अपने शांतिपूर्ण अनुभव को साझा किया। उसके अनुसार, प्रयागराज में भीड़ होने के बावजूद, वहाँ किए गए बेहतरीन इंतजामों की वजह से वह गंगा के पास एक आश्रम में आराम से रह सकती थी। इस बीच, एक करीबी दोस्त और पड़ोसी ने बताया कि उसने और उसके पति ने कुंभ के लिए लखनऊ के लिए अपनी फ्लाइट बुक कर ली है। धीरे-धीरे, यह विचार जड़ पकड़ने लगा- क्यों न हम भी जाएँ?

इसलिए मैंने अपनी बहनों से इस बारे में चर्चा की, जो हैदराबाद, पुणे और बैंगलोर में रहती हैं। हम सभी सहमत थे कि यह जीवन में एक बार मिलने वाला अवसर है क्योंकि महाकुंभ मेला हर 144 साल में एक बार होता है और हमें इसे नहीं छोड़ना चाहिए। हम धन्य महसूस कर रहे थे कि यह हमारे जीवनकाल में हो रहा है।

कुंभ में पहले से जा चुके दोस्तों ने शानदार कहानियाँ सझा कीं और हमें वहाँ जाने के लिए प्रोत्साहित किया। इसलिए, हमने पहला कदम उठाया- अपनी फ्लाइट बुक कर ली। हमने सबसे ज़्यादा भीड़ से बचने के लिए "शाही स्नान" के दिनों को टाल दिया। सबसे किफायती विकल्प दिल्ली और फिर लखनऊ तक उड़ान भरना था, क्योंकि उस समय सीधी उड़ानें बहुत महंगी थीं। लखनऊ से हमने प्रयागराज (4-5 घंटे की ड्राइव) के लिए कार किराए पर लेने की योजना बनाई। हमारी योजना सरल थी: संगम पर पवित्र स्नान करना और घर लौटना।

ठहरने की योजना

मेरी बड़ी बहन ने हमारी कार और दिल्ली ठहरने की बुकिंग की। प्रयागराज के लिए, मैंने पहले बताई गई अपनी पड़ोसी सहेली से संपर्क किया। उसने मुझे प्रयागराज में रहने वाली अपने पति

की परदादी (जिसे मैं आगे से चाची कहूँगी) का नंबर दिया। जब मैंने चाची से संपर्क किया, तो वह आश्वस्त थी और उसने मुझे बताया कि यह बिल्कुल सुरक्षित है। उसने संगम से सिर्फ़ 5 किलोमीटर दूर एक होमस्टे चला रही थी ।

शुक्र है कि हमारी तारीखों पर कमरे उपलब्ध थे और हमने तुरंत बुक कर लिए। चाची के मैनेजर ने कहा कि वह स्नान के लिए सुबह 4 बजे हमें संगम ले जाने के लिए हमारे लिए ई-रिक्शा की व्यवस्था करेंगे। तैयारियों के बावजूद, हम अभी भी हिचकिचा रहे थे। हमारे सहकर्मियों ने हमें हतोत्साहित किया, यह कहते हुए कि हम इतने बड़े आयोजन के दौरान जाने के लिए पागल हैं। अमेरिका में हमारे बच्चे भी चिंतित थे।

अपनी घबराहट को शांत करने के लिए, मैंने चाची से फिर से संपर्क किया। उन्होंने हमें आश्वस्त करते हुए कहा कि भीड़ कम हो गई है। उन्होंने मुझे चेन्नई के एक अन्य परिवार से भी मिलवाया जो उनके होमस्टे में रुके थे। वे अपने साथ बुजुर्ग माता-पिता और छोटे बच्चों को लेकर आए थे और उन्होंने कहा कि भीड़ को संभाला जा सकता है और सुविधाएँ मौजूद हैं। इससे हमें यकीन हो गया कि हम आखिरकार जा रहे हैं!

पहला दिन: दिल्ली और लखनऊ की ओर

मैं और मेरे पति बुधवार की शाम को चेन्नई से निकले और रात को दिल्ली पहुँचे। मेरी बहनें और बहनोई पुणे, हैदराबाद और बैंगलुरु से आए थे। हम दिल्ली में एक स्वागत योग्य गेस्ट हाउस में रात भर रुके, जहाँ हमने स्वादिष्ट भोजन खाया ।

अगली सुबह हम लखनऊ के लिए रवाना हुए। एक बड़ी इनोवा कार हमें एयरपोर्ट पर लेने आयी। हालाँकि यह पुरानी थी, लेकिन ड्राइवर खुशमिजाज़ था और रास्ते से वाकिफ़ था।

प्रयागराज की यात्रा

फ्लाइट में नाश्ते के बाद, हम सुबह 11 बजे प्रयागराज के लिए निकले। सड़कें साफ थीं और हमने यात्रा का आनंद लिया, पारिवारिक कहानियाँ साझा कीं और गाने गाए। दोपहर के भोजन के एक छोटे ब्रेक के बाद, हम शाम 5 बजे प्रयागराज के बाहरी इलाके में पहुँच गए।

चूँकि अभी भी सुबह थी, इसलिए हमने होमस्टे में चेक इन करने के बजाय सीधे गंगा की ओर जाने का फैसला किया। पुलिसकर्मी हमें शहर के बीच से होकर ले गए। हमने हर जगह "संगम की ओर" के संकेत देखे। दुर्भाग्य से, उस दिन के लिए नाव सेवाएँ समाप्त हो गई थीं और सभी टेंट चले गए थे - केवल खाली मैदान रह गए थे। नागा साधु भी चले गए थे ।

हमारा ड्राइवर, जो उस इलाके से परिचित था, हमें सबसे नज़दीकी जगह पर ले गया और वहाँ पार्क कर दिया। उसने हमें उस जगह और लैंडमार्क को याद रखने के लिए कहा। हमने अपने साथ सिर्फ़ ज़रूरी चीज़ें लीं- कपड़े, मोबाइल फ़ोन, पर्स- और अपनी यात्रा शुरू की।

संगम का अनुभव

पुलिस चौकी पर हमें बताया गया कि केवल दो पहिया वाहन ही आगे जा सकते हैं। हमने मोल-तोल करके छह लोगों के लिए तीन बाइक किराए पर लीं। युवा सवारों ने हमें "माताजी" कहकर संबोधित किया और हमें संकरी गलियों से होते हुए ड्रॉप-ऑफ पॉइंट तक ले गए।

वहां से, हमने पहली बार भारी भीड़ देखी। यह इलाका एक भव्य उत्सव के मैदान जैसा लग रहा था, हर जगह गिने-चुने पोस्ट और खाने के स्टॉल लगे हुए थे। लोग कपड़े और तौलिये रखने वाले बैग लेकर चल रहे थे। हम भी उनके साथ चलने लगे ।

एक घंटे चलने के बाद, हम संगम पहुँच गए। यह लोगों से भरा हुआ था, लेकिन हमें गीली रेत पर एक छोटी सी जगह मिल गई। तभी हमें एहसास हुआ कि रास्ते में बिकने वाली चांदी की सी प्लास्टिक शीट गीली रेत पर हमारे सामान रखने के लिए बिछाई जानी थी। चूँकि हमने उन्हें नहीं खरीदा था, इसलिए हमें कपड़े रखने के लिए अपने साथ लाए प्लास्टिक कवर का इस्तेमाल करना पड़ा।

हम पवित्र स्नान करने के लिए बारी-बारी से नदी में उतरे। मेरे पति और मैं पहले गए। हमें आश्चर्य हुआ कि पानी गर्म था, और नदी का तल ठोस और सुरक्षित था। हमने तीन बार डुबकी लगाई - हमें फिर से छोटे बच्चे जैसा महसूस हुआ । सभी ने अपनी बारी ली। हमने पवित्र जल घर ले जाने के लिए पानी के डिब्बे भरे।

हालाँकि, मेरी बड़ी बहनें लगभग एक घंटे तक खो गई थीं । उन्होंने अपने फोन और चश्मे नदी के तट पर छोड़ दिए थे। हम उनके लापता होने की रिपोर्ट करने ही वाले थे कि मुझे बंगलुरु से उनके एक बेटे का फोन आया कि वे सुरक्षित हैं और पोस्ट नंबर 138 पर हमारा इंतज़ार कर रहे हैं। लापता बहनों में से एक ने अपने बेटे को फोन करने के लिए किसी की मदद ली क्योंकि उसे टीम के बाकी सदस्यों के फोन नंबर याद नहीं थे और इसलिए उसने अपने बेटे को फोन करके मुझे बताया कि वे सुरक्षित हैं। राहत की बात है कि हम फिर से मिल गए। तभी हमें उन क्रमांकित पोस्टों का उद्देश्य समझ में आया!

हम अपने गीले कपड़ों में ठिठुर रहे थे। स्वयंसेवकों ने हमें चेंजिंग बूथ तक पहुँचाया। आखिरकार, सभी ने कपड़े बदले और हम वापस चलने लगे, रास्ते में उबले हुए मकई खाते रहे। हमने फिर से स्कूटर किराए पर लिया और अपनी कार में वापस आ गए, जहाँ ड्राइवर इंतज़ार कर रहा था।

होमस्टे और आतिथ्य

चाची के मैनेजर ने हमें होमस्टे तक पहुँचाया। होमस्टे तक पहुँचने के लिए एक शादी के बारात ने हमारा रास्ता रोक दिया, इसलिए हमें घूम-घूमकर आना पड़ा। होमस्टे एक मामूली दो बेडरूम वाला फ्लैट था, लेकिन गर्मजोशी से आतिथ्य प्रदान करता था। हम चाची से मिले - एक प्रेरणादायक 75 वर्षीय महिला जिसके कई शौक हैं। रात का खाना पास के एक शाकाहारी रेस्तरां में स्वादिष्ट गर्म रोटियों और सब्जियों के साथ था। बुनियादी सुविधाओं के बावजूद, चाची और उनकी टीम ने हमें घर जैसा महसूस कराया ।

वापसी

अगली सुबह, चाय और गर्म स्नान के बाद, हमने पैक किया हुआ खाना लिया और सुबह 8:30 बजे लखनऊ के लिए निकल पड़े। हम शाम तक पहुँच गए, रास्ते में कुछ बार रुके। लखनऊ में, हमने एक आलीशान होटल में चेक-इन किया - देहाती प्रवास के बाद शुद्ध आनंद।

रात के खाने के लिए, एक रिक्शा हमें श्री गणपति स्वीट्स एंड रेस्टोरेंट ले गया, जहाँ हमने स्वादिष्ट शाकाहारी भोजन का आनंद लिया और घर ले जाने के लिए मिठाइयाँ और नमकीन खरीदे।

अगली सुबह, हम हवाई अड्डे के लिए जल्दी निकल गए। एक साथ दिल्ली के लिए उड़ान भरने के बाद, हम अपने-अपने घरों की ओर निकल पड़े। हम शनिवार की रात को चेन्नई पहुँचे, अपने साथ क्रिस्टल-क्लियर गंगा जल की बोतलें लाए - कुछ अख़बारों के दावे के बावजूद, इसमें कीचड़ या रंग नहीं था।

अंतिम विचार

हमें महाकुंभ में भाग लेने के लिए केंद्र सरकार से भागीदारी का प्रमाण पत्र भी मिला। हालाँकि इसमें प्रयास, पैसा और अनिश्चितताएँ शामिल थीं, लेकिन यह वास्तव में इसके लायक था - एक यादगार और दिव्य अनुभव जिसे हम कभी नहीं भूलेंगे।

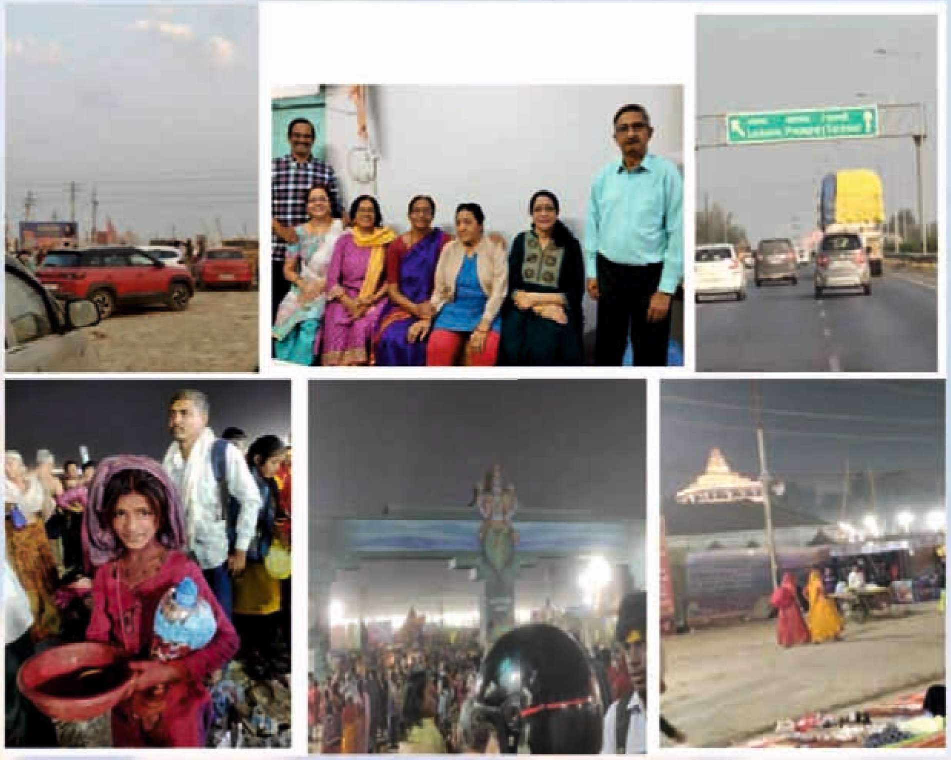

सुश्री माधवी तोमर
लेखाकार

ये दुनिया कितनी सुन्दर हो सकती है
उस कल्पना को साकार करना चाहती हूँ,
मैं सवरना चाहती हूँ।
हर प्राणी में प्रेम भरे उस रस को
स्वयं में उत्सर्जित करना चाहती हूँ।
मैं सवरना चाहती हूँ।
उन जगमगाती आँखो के लिए,
उस मासूम सी मुस्कान के लिए
मैं खुद को कुर्बान करना चाहती हूँ
मैं सवरना चाहती हूँ।
महकते फूलों की खुशबू बन
मैं दुनिया में बिखरना चाहती हूँ,
मैं सवरना चाहती हूँ।
चेहरे पर एक मुस्कान लिए
मैं अन्त तक जीना चाहती हूं
फिर उसी मुस्कान के साथ ही मरना चाहती हूँ,
मैं सवरना चाहती हूँ।

सुश्री माधवी तोमर
लेखाकार

ए जिंदगी तू किस गालिब की गजल है।

ए जिंदगी तू किस गालिब की ग़ज़ल है।

कभी खूबसूरत तो कभी गम का समंदर है।

कभी आसमान में बिखरी तो कभी रोशन मेरे अन्दर है।

कभी फूलों की खुशबू सी कोमल,

तो कभी भयानक सा बवंडर है

ए जिदंगी जिसे तूने समझा वो बाकियो से बेहतर है।

लेकिन जिसने तुझे समझ लिया वही तो असली सिकंदर है।

श्री शशिशेखर
लेखाकार

किसी तिमिर में एक नूर खिला दूं,
अगर तुम मुस्कुरा भर दो,
तो उस शशि को धरा पर ला दूं..
प्यार भरा गूंथा एक माला,
तुम्हारे गले में सजा दूं..
खामोशी कहती, बहुत कुछ है तुम्हारी,
दिल कहता है उसे अपने लफ्जो में पिरो दूं..
ये आस भरे नयन, जो निहारते है हमें
उनको एक सच्चाई दे कर आसमा तक पहूंचा दूं...
अब जो ये "मुस्कान" है चेहरे पर शेखर,
उसे अपनी हर आदतों में उतार दूं !!

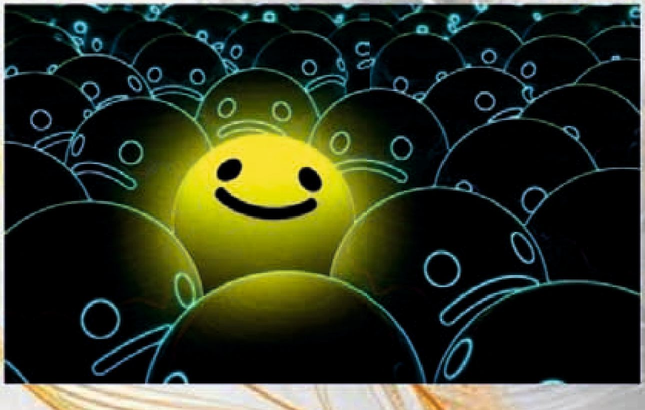

खुशी है...

सुश्री तन शर्मा
लेखाकार

खुशी नहीं है पैसे में,
न ही ऐसे वैसे में

खुशी तो है अपनों में,
अपनों के मीठे सपनों में
सपनों की लंबी राहों में
राहों की प्यारी बाहों में।

खुशी तो है खुल कर जीने में,
या फिर शान से मरने में,
अपनों के लिए मिटने में,
माँ के प्यार से पिटने में।

खुशी है...

माता-पिता, भाई-बहन और परिवार में,
उनसे प्राप्त सनेह, लाड़ और प्यार में,
रक्षाबंधन के त्योहार में,
भाई से मिले उपहार में।

खुशी है...

टिमटिमाते तारों में,
गलियों और चौबारों में,
गाठ सच्चे दोस्त यारों में,
उनके नखरे हज़ारों में ।

खुशी है...

अपनों के लिए मुस्कुराने में,
गैरों को अपनाने में,
रुठे हुए को मनाने में
दुख दर्द मिटाने में।

खुशी है...

सफल हुई आँखों की दृष्टि में,
ईश्वर की रची हुई सृष्टि में
भीषण गर्मी के बाद की वृष्टि में
आबी रोटी खा लेने की तुष्टि में।

खुशी नहीं है, जात-पातों में
न ही संसार के समुंद्र सातों में

खुशी है...

भेदभाव रहित बातों में
दिल के रिश्ते-नातों में
पूर्ण चंद्र की रातों में
बिन आशा के मिलने वाले छातों में

खुशी है ...

बच्चे के गिरने पर, चीटी मरने की खबर में,
शहर की चकाचौंध के बाद केवल अपने घर में
रविवार को मिलने वाली शांत दोपहर में
गाँव की धूप एवं शीतल जल की नहर में

खुशी है....

पिता की छाया में पनपे बचपन के हर क्षण में,
माँ के प्रेम से परोसे भोजन के कण-कण में
बहन की रक्षा हेतु लिए गए भाई के प्रण में

स्वंय के प्रतिबिंब युक्त दर्पण में।

खुशी है ....

मुट्ठी में कुछ छिपाने में,
फिर न पकड़े जाने में
कोने में बैठकर खाने में
फिर अनभिज्ञ बन जाने में।

खुशी है...

बीती बातों को भुलाने में,
ईमानदारी का धन कमाने में
मेहनत का पसीना बहाने में
गलतफहमियों की दूरियाँ मिटाने में।

खुशी है...

जुगनू की तरह जगमगाने में,
खेतों के लहलहाने में
नदी की तरह बहते जाने में
फिर अपनी किस्मत आजमाने में।

खुशी है...

गिरकर फिर संभलने में
निराशा की शाम के ढलने में
उम्मीद की किरण के मिलने में
स्वाभिमान के वातावरण में निखरने में।

तनाव एवं मानसिक बीमारियाँ

श्री अजयनाथ त्रिपाठी
सहायक लेखा अधिकारी

तनाव जिसे अंग्रेजी में स्ट्रेस भी कहा जाता है यह एक प्रकार की भावनात्मक और मानसिक स्थिति होती है जो हमारे शरीर द्वारा किसी वास्तविक या काल्पनिक खतरे से बचने के लिए दी जाती है यह हमारे शरीर की स्वाभाविक प्रतिक्रिया है परन्तु जब ये लगातार बनी रहती है तो हमारे शरीर पर बहुत ही नकारात्मक प्रभाव डाल सकती है और नकारात्मक प्रभाव ही धीरे –धीरे मानसिक बीमारियों का रूप धारक कर सकते हैं। वास्तव में तनाव एवं मानसिक बीमारियाँ एक दूसरे की पूरक है बस हम यह कह सकते हैं कि मानसिक बीमारियों का प्रारम्भिक चरण तनाव है, जहां से तनाव की सीमाएं समाप्त होती है वहां से मानसिक बीमारियों की शुरुआत होती है।

तनाव के दौरान हमारे शरीर से एड्रेनलिन और कॉर्टिसोल जैसे तनाव हार्मोन सक्रिय होते हैं जो हमारे शरीर को तनाव से बचाने में मदद करते हैं लेकिन एक सीमा के बाद तनाव अवसाद का रूप धारण कर लेता है और फिर कई मानसिक बीमारियाँ हमें जकड़ सकती है जैसे कमजोर याद्दाशत, भूलने की बीमारी, शंका करने की बीमारी, नशे की लत, सरर्दद, हमेशा दुखी महसूस करना नींद न आना, छोटी- छोटी बात पर गुस्सा आना, अकेलापन उच्च रक्तचाप इत्यादि।

आज की भागदौड़ की दुनिया में तनाव एक आम समस्या बनता जा रहा है इसे आप 'अनचाहा मेहमान' भी कह सकते हैं जो कभी भी किसी के भी घर दस्तक दे सकता है ज्यादातर लोगों का सोचना होता है कि तनाव हमेशा व्यस्कों और बुजुर्गो को होता है परन्तु ऐसा बिल्कुल भी नहीं है तनाव किसी भी व्यक्ति को किसी भी उम्र में हो सकता है यहां तक कि बच्चों को भी हो सकता है WHO के अनुसार भारत में मानसिक रोगों से पीड़ित लोगों की संख्या सर्वाधिक है विश्व भर में मानसिक बीमारियों से जूझ रहे लोगों में भारत का लगभग 15 फीसदी हिस्सा हैं। लेकिन विडम्बना यह है कि हमारे देश में जागरुकता की कमी या अज्ञानता के कारण किसी भी प्रकार की मानसिक बीमारियों से ग्रसित व्यक्ति को पागल ही माना जाता है कहीं-कहीं तो देखा गया है कि ऐसे लोगों के साथ जानवरों जैसा बर्ताव भी किया जाता है।

आज के समाज में जहाँ भौतिकता का प्रसार हमारी जीवन शैली में हो रहा है जहां रिश्ते सिर्फ नाम के होते जा रहे है जहां सिर्फ पैसों की पूछ होने लगी लगी है हर व्यक्ति सिर्फ दिखावे में जी रहा है वहां तनाव एवं मानसिक बीनारियां घर-घर पैर पसार रही है। तनाव एवं मानसिक बीमारियों को पहचानने में ही हम बहुत बड़ी भूल कर जाते हैं आज भी तनाव एवं मानसिक बीमारियों की कोई पूछ नहीं है इसे रोग के रूप में पहचान ही नहीं मिल पा रही है, इसे आज भी काल्पनिक ही माना जा रहा है।

तनाव होने के मुख्य कारणों में बेरोजगारी, पैसों की कमी, कोर्ट केस, झगड़ा, रिश्तों में मनमुटाव या कोई भी ऐसी घटना हो सकती है जो आपके मन के खिलाफ हुई हो और आप की सहनशक्ति से बाहर हो।

तनाव एवं मानसिक बीमारियों के लक्षणों में प्रायः देखा गया है कि व्यक्ति को बैचेनी होने लगती है वह चिड़चिड़ा स्वभाव का हो जाता है, याददाश्त कमजोर होने लगती है, रक्तचाप बढ़ जाता है, कब्ज की शिकायत होने लगती है और व्यक्ति हमेशा दुखी रहने लगता है जिससे उसका शरीर धीरे-धीरे रोगों का घर बन जाता है।

WHO के अनुसार भारत में हर दस लाख की आबादी पर केवल 3 ही मनोचिकित्सक है बल्कि विश्व में 1 लाख की आबादी पर 6 से 7 मनोनिकित्सकों का मानक है।

तनाव जिस तरीके से आज पैर पसार रहा है यह कहना बिल्कुल भी अतिश्योक्ति नहीं होगी कि हमारा देश एक गम्भीर मानसिक स्वास्थ्य महामारी की तरफ बढ़ रहा है।

तनाव एवं मानसिक बीमारीयों से हमें बचने की जरूरत है हमें खुद ही नहीं बल्कि अपने आसपास के लोगों का भी ध्यान रखने की आवश्यकता है कि कहीं कोई इससे ग्रस्त तो नहीं लग रहा है इससे बचने के लिए हमें सकारात्मक सोच के साथ योग, पर्याप्त नींद, स्वस्थ जीवन शैली और ध्यान करना चाहिए। साथ ही हमें अपने रिश्तों में भी समय देना चाहिए, चाहे बड़े-बुर्जुग हो या बच्चे उन्हें समय अवश्य दें इससे आप और आपके सगे-सम्बन्धी दोनों तनाव और मानसिक बीमारियाँ से बचे रहेंगे और यदि किसी को भी कोई लक्षण प्रतीत होता है तो तुरन्त चिकित्सक से सम्पर्क करें।

यह सच है कि व्यक्ति हमेशा खुश नहीं रह सकता, वह हमेशा तनाव से नहीं बच सकता, लेकिन क्या कठिन परिस्थितियों में हम छोटी सी खुशी नहीं ढूंढ सकते, क्या तनाव करने या दुखी रहने से सब कुछ ठीक हो जाएगा? बिल्कुल भी नहीं इसलिए हमें हमेशा सकारात्मक रहते हुए स्वयं को और अपने आसपास के लोगों को भी तनाव एवं मानसिक बीमारियों से बचाना होगा।

तनाव एक आग है जो आपके जीवन को जला सकती है
इसलिए इसे जलने से पहले ही बुझा दीजिए।

दादा- दादी

सुश्री ज्योति वर्मा
आशलिपिक

सागर से भी गहरा होता दादा-दादी का प्यार
इनके ही आशीर्वाद से रहे सुखी परिवार
बचपन से ही जिन्होंने हमको खुशियाँ दी है अपार
इनके ही आशीर्वाद से रहे सुखी परिवार
मिल जुलकर परिवार में रहना, वो हमको सिखलाते हैं।
घर के सारे निर्णय लेते घर के मुखिया कहलाते हैं
आदर्शों से इनके चलता हम सबका घर-बार
इनके ही आशीर्वाद से रहे सुखी परिवार
पापा के बचपन के किस्स वो हमको बतलाते हैं।
अपने जीवन के अनुभव से कुछ न कुछ सिखलाते हैं।
कोई दे नहीं सकता जग में हमें इतना प्यार
इनके ही आशीर्वाद से रहे सुखी परिवार
सागर से भी गहरा होता दादा-दादी का प्यार
इनके ही आशीर्वाद से रहे सुखी परिवार।

सुश्री ज्योति वर्मा
आशुलिपिक

बेटा बाप पे है चिल्लाए अपनी माँ पे रौब दिखाए।
बीवी पर तो प्यार जताए बाबू सोना कह के बुलाए।।

लड़का हुआ तो ढोल है बजता घर आँगन भी खूब है सजता।
लड़की हुई तो मातम छाया जैसा बड़ा है संकट आया।।

बेटा जब ससुराल को जाए खातिरदारी भर के पाये।
बेटी जो ससुराल में रहती ना जाने क्या-क्या है सहती।।

मुँह पे जिसके करे बड़ाई पीठ पे उसके करे बुराई।
दिखे सामने से जो सुंदर झूठ भरा है उसके अंदर।।

माँ बेटे को जनम है देती बदले में कुछ भी न लेती।
फिर भी बेटा माँ से लड़ता तुने क्या है किया ये कहता।

देश में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा – हिन्दी

श्री शिव जी पांडे
वरिष्ठ लेखाकार

क्या मैं एक सवाल पुछ सकता हूं कि हिन्दी के विरोध में आंदोलन हो सकता है क्या?
लोगों के मेरे सामान्य ज्ञान पर आश्चर्य होगा। क्यों न हो कुछ दिन पहले ही आंदोलन जो चल रहा था। लेकिन जरा सोचिए आप बाल गंगाधर तिलक होते तो क्या उन्हें यह देखकर आँखो कानों पर यकीन होता और उनके द्वारा निकाले गए हिन्दी केसरी के लेखक माधव राव सप्रे इस बारे में क्या सोचते।

सप्रे जी के अलावा बाबु राव विष्णु पराड़कर, लक्ष्मण नारायण गर्दे, राहुल बारपते जेजे यशस्वी हिन्दी संपादको द्वारा तैयार की गई पत्राकारों की पीढ़िया हिन्दी और अन्य भाषा के ऊँची समीकरण द्वारा रची गई है जो 11वीं से 17वीं सदी के बीच राज दरबारों में परवान पर चढ़े थे।

यह समीकरण शाहजी भोंसले उनके महान पुत्र छत्रपति शिवाजी के बेटा संभाजी और दिल्ली तक अधिकार जमाने वाले पेशवाओं तक जाता है।

इनका दरबार हिन्दी के विख्यात कवियों से भरे पड़े थे। जिनमें भूषण और मति राम नाम के हिन्दी के दो प्रमुख कवि थे।

कौन नहीं जानता कि हिन्दी और अन्य भाषा की 80 प्रतिशत शब्द सेपता सामान्य है। व्याकरण व्यवस्था एक जैसी है। बहुत सी भाषाएं एक ही लिपि में लिखी जाती है। उत्तर भारत का समृद्ध भक्ति कालिन नाम देवी जेजे संत कवियों की देन है। इस तरह के बहुत से तथ्य मैं तमिल क्षेत्र के बारे में भी दे सकता हूं जो 1930 से ही हिंदी का प्रचलन नहीं चाहता है, विरोधाभास यह है कि तीस के दशक में प्रेमचंद की कहानियों और उनके उपन्यास सेवासदन के अनुदित संस्करणों ने तमिलनाडु में जो धुम मचाई, वह कामायनी, वाणभट्ट की आत्मकथा, नीला चांद और राग दरबारी की तमिल पाठकों के बीच असाधारण लोकप्रियता के रुप में आज भी जानी जाती है। पुरा तमिल प्रदेश गांधी द्वारा स्थापित दक्षिण भारतीय हिंदी प्रचारणी सभाओं

के दफ्तरों से भरा हुआ है। वहां दो उग्र हिंदी विरोधी आंदोलन हो चुके है। लेकिन इनकी प्रचुर हिंसा और आगवानी के बावजुद इन कार्यालयों पर एक भी पत्थर नहीं फेंका गया।

भारत के सामाजिक भाषा शास्त्र का वह एक स्थापित तथ्य है कि हिंदी के मौजुदा रुप की रचना एक राष्ट्रीय-सांस्कृतिक उद्देश्य से की गई थी। यह था एक महादेश की अत्यंत समृद्ध भाविक विविधता की परस्पर जोड़ने के लिए हिंदी नाम का रेलवे पर सभी भाषाओं की ट्रेन रुक सके, यात्री देखकर हिंदी पढ़ सके, जानकारी प्राप्त कर सके। साठ के दशक में ही बलदेव राज नायर ने अपने लेख हिंदी एक लिंक लैंग्वेज में कालजयी सुत्रीकरण किया था। नायर ने दिखाया था हिंदी एक अखिल भारतीय सम्पर्क भाषा के रुप में विकसित हो सकते है। हिंदी की साहित्यकार भी अपनी रचनाओं के हिंदी में प्रकाशन के लिए साहित्य अकादमी पर दबाव डाल रहे है।

वे हिंदी क्षेत्र में बिक जाना चाहते है। अगर कोई मलयालम का एक उपन्यास पंजाबी में छपना चाहते है तो वह उसका हिंदी अनुवाद का पंजीकरण करके वहां के पाठकों तक पहूंचा सकता है। नायर ने देखा कि हिंदी विभिन्न भारतीय भाषाओं के बीच साहित्यिक विनिमय की एजेंसी बनती जा रही है।

देश के सभी हिस्सों में हिंदी की जगह किसी सरकारी आदेश का फल न होकर एक दीर्घकालिन एतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम है। ओडिशा के राउरकिला स्टील प्लांट में काम करने वाले अंग्रेजी न जानने वाले मजदुरों आपस में हिंदी में बात करते है न कि ओड़िया में।

मुम्बई की सार्वदेशिकता ने एक भाषा के रुप में हिंदी को अपनाया है। अंडमान में रहने वाले हिंदी, मलायलम, बंगाली, तमिल और तेलगु भाषी लोगों ने आपसी सम्पर्क के लिए हिंदी फिल्मों की वजह से लोगों की हिंदी जानकारी के स्तर में भी वृद्धि हुई है। रेडियो सीलोन और समाचार के माध्यम से प्रसारित किए जाने वाले फिल्मों के गीत संगीत को इस भाषा के प्रसार में श्रेय दिया गया है। राजनीति के कारण हिंदी का जो भी विरोध होता रहे सामाजिक क्षेत्र में वह तेजी से अखिल भारतीय सम्पर्क भाषा बनाने की तरफ से बढ़ चुकी है। इस हकीकत को नजर अंदाज करके हम अपना नुकसान ही कर सकते है। ये लिखने वाले का अपना विचार है।

ऊटी की यात्रा

श्री टीकम चन्द्र सैनी
लेखाकार

मेरे कार्यालय से हम पांच दोस्तों टीकम (स्वयं), मनोज, सुमित, रवि, जितेंद्र ने तमिलनाडु के खूबसूरत हिल स्टेशन ऊटी घूमने का योजना बनाया। फिर हमने पता लगाया कि वहां पर होटल की रेट क्या है? जाँच पड़ताल से पता चला कि वहां पर होटल बहुत महंगी है, इसलिए हमने होलीडे होम सर्च किया जो केन्द्र सरकारी कर्मचारी के लिए होते हैं और सस्ते रेट पर उपलब्ध होते हैं। होलीडे हौम बुक कर लिया गया। फिर हमने वहां की जाने के लिए ट्रेन का पता लगाया तो हमें पता चला कि चेन्नई से सीधे ऊटी के लिए तो कोई ट्रेन ही नहीं है। पहला रास्ता है कि हम कोयंबटूर जाए और वहां से बस लेकर ऊटी जाए। या फिर कोयंबटूर से 35 किलोमीटर आगे मेडूपलायम स्टेशन है वहां तक केवल एक ट्रेन जाती है जहां से ऊटी की दूरी 50 किलोमीटर है और उस ट्रेन का नाम नीलगिरी सुपरफास्ट है जो चेन्नई से रात को 9:05 पर रवाना होती है और सुबह 6:20 पर मेडूपलायम उतार देती है इसी तरह वापसी में यह ट्रेन रात को 9:20 पर मैडूपलायम से चलती है और सुबह 6:25 पर चेन्नई उतार देती है चेन्नई से ऊटी जाने के लिए सबसे उपयुक्त और एकमात्र ट्रेन है। फिर हम सभी दोस्तों ने उस ट्रेन का टिकट ले ली। हम सब वहां पर दो दिन ठहरने का निश्चय किया और उसी हिसाब से तीसरे दिन की वापसी का टिकट बनवाया । वहां के मौसम के मद्देनजर हमने स्वेटर, जैकेट भी पैक कर लिए। यात्रा के दिन हम निश्चित समय से पहले स्टेशन पहूंच गए और ट्रेन में सवार होकर सुबह 6:00 बजे मेडूपलायम उतर गए। वहां से ऊटी जाने के कई विकल्प है एक तो आप सरकारी बस ले सकते है लेकिन वह बस तीन से चार घंटे लेती है। चूंकी हम पाँच लोग थे इसीलिए हमने टैक्सी सर्विस लेने का निर्णय लिया। टैक्सी ने लगभग डेढ़ से दो घंटे में हमें ऊटी पहूंचा दी। ऊटी पूरा पहाड़ के ऊपर बसा है इसीलिए हमारी टैक्सी उन पहाड़ों को पार करते हुए जा रही थी जहां एक तरफ पहाड़ थे तो दूसरी तरफ घाटिया थी साथ ही बहुत सारे चाय के बागान का मनोरम दृश्य भी। प्रकृति के मनोरम दृश्य ने जैसे हमारे मन को मोह लिया था तथा एक अनोखा आनंद की अनुभूति हो रही थी, लगभग डेढ़ से दो घंटे बाद हम ऊटी में होलीडे होम पहूंच गए, हॉलीडे होम जाकर हमने थोड़ा आराम किया उसके बाद वहां भोजनशाला में खाना खाया। और अब आयी बारी घुमने की। कुछ प्रमुख स्थान जैसे ऊटी झील, बोटैनिकल गार्डन, पायकारा फॉल्स, डोड्डा बेटा पीक, रोज गार्डन, टी संग्रहालय, पाइन

फॉरेस्ट की सैर की शुरुआत हुई। फिर हमने देखा कि कौन सी जगह एक-दो किलोमीटर के आस-पास है ताकि हम उन स्थानों को दो तीन घंटे के अंदर कवर कर लें।

ऊटी झील जो होलीडे होम से लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर है हम वहां पहुँचे। फिर हमने वहां जाकर देखा कि यह एक कृत्रिम झील है और इसके चारों ओर नीलगिरी के पेड़ है, वहां पर नौका बिहार, मिनी ट्रेन सहित कई सुविधाएं के साथ-साथ खान-पान की सुविधाएं भी उपलब्ध थीं तो हमने वहां पर नौका बिहार का आनंद लिया और जलपान किया। उसके सामने ही रोज गार्डन था वहां पर 20000 से भी अधिक किस्में की गुलाब के पौधे थी जिनमें कुछ दुर्लभ व विदेशी किस्में भी शामिल थी।

वहां से हम बोटेनिकल गार्डन की तरफ चल दिए वहां हमने देखा कि एक बहुत बड़ा गार्डन था जो लगभग 55 एकड़ जमीन में फैला हुआ है और बहुत सारे पेड़ पौधे फूल वहां पर लगे हुए हैं और सैकड़ों आदमी वहां पर घूम रहे थे और प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद ले रहे थे।

और फिर हम ऊटी के बाजार में घूमने निकले। वहां हमने देखा की चॉकलेट की बहुत सारी वैरायटी थी, फिर हमने चॉकलेट खरीदी और खाई जो कि बहुत स्वादिष्ट थी फिर हम घूमकर वापस अपने कमरे पर आ गए और टैक्सी वाले को अगली सुबह 7:00 बजे आने को कहा। सुबह हम नित्यकर्म से निवृत होकर टैक्सी में सवार होकर घूमने के लिए निकल गए हम सबसे पहले पाइन फॉरेस्ट गए। यह बहुत बड़ा फॉरेस्ट था। यह अपनी प्राकृतिक सुंदरता, शांत वातावरण और फिल्मों की शूटिंग के लिए जाना जाता है वहां पर व उसके आसपास राजा हिंदुस्तानी सहित कई हिंदी फिल्मों, धारावाहिको गानों की भी शूटिंग हुई थी। वहां पर घूमने के बाद हम पायकारा झरने पर घूमने गए, यह झरना पायकारा नदी द्वारा बनाया गया है और यह नीलगिरी की पहाड़ियों के बीच स्थित है। इसकी प्राकृतिक सुंदरता देखते ही बनती है। यह घने जंगलों से घिरा हुआ है। वहां बहुत शांत वातावरण है और पक्षियों की चहचहाट सुनकर व वहां का नजारा देखकर हम सब बहुत गदगद हो गए, उसके बाद हमने वहां पर पास में ही एक रेस्टोरेंट में दोपहर का खाना खाया और हमारे अगले स्थान चाय संग्रहालय के लिए रवाना हो गए, हम वहां पर पहूंचे तो वहां पर एक टी फैक्ट्री व संग्रहालय था जो 1839 मीटर की ऊंचाई पर है तथा वह 1 एकड़ में फैली हुई है जिसमें पत्तियां तोड़ने से लेकर पैकेजिंग तक को करीब से देखा जा सकता है यहां पर चाय के उत्पादन की प्रक्रिया, चाय की पत्तियों का मुरझाना, रोलिंग, सुखना, शिफ्टिंग, आदि लाइव दिखाया जाता है या आने वाले सभी आगंतुकों को इलायची, अदरक, मसाला एवं ग्रीन टी परोसी जाती है। वहां पर एक चॉकलेट क्षेत्र भी है जहां कोक से लेकर चॉकलेट बनाने तक की प्रक्रिया का अवलोकन किया जा सकता है। इसके बाहर ही कुछ एडवेंचर सुविधा भी उपलब्ध है, जिसमें रस्सी पर चलना, हाइकिंग, फ्री फॉल आदि प्रमुख है, वहां से हमने चॉकलेट्स खरीदी और कुछ एडवेंचर एक्टिविटी की और हमारे अगले डेस्टिनेशन डोडाबेट्टा पिक के लिए रवाना हुए, डोडाबेट्टा का शाब्दिक अर्थ बड़ा पहाड़ होता है, यह तमिलनाडू की सबसे ऊंची है। और इसकी ऊंचाई लगभग 8652 फीट है। डोडाबेट्टा पीक की निम्न विशेषाएं थी।

मनोरम दृश्य - डोडाबेट्टा पिक से आसपास के हरे-भरे परिदृश्य, घने जंगल और साफ दिनों में मैसूर तक का नजारा देखा जा सकता है।

वेधशाला टॉवर - चोटी पर एक वेधशाला टॉवर है जिसमें दूरबीनें लगी हैं, जिससे पर्यटक दूर के दृश्यों का आनंद ले सकते हैं।

फूलों का बगीचा - टॉवर के चारों ओर एक सुंदर मैनीक्योर किया हुआ फूलों का बगीचा है जो ढलानों में नीचे की ओर झुका हुआ है।

ट्रेकिंग - डोडाबेट्टा पिक ट्रेकिंग के लिए एक लोकप्रिय स्थान है।

वनस्पति और जीव - डोडाबेट्टा का पारिस्थितिकी तंत्र शोला वन घास के मैदानों, नीलगिरि के बागान और नीलगिरि तहर, भारतीय बाइसन और मालाबार गिलहरी जैसे जानवरों का घर है। वहां बहुत कोहरा छा रहा था क्योंकि वह बहुत ऊंचाई पर स्थित था, वहां के अद्भुत दृश्य का हमने आनंद लिया फिर जलपान किया और उसके बाद अपने कमरे पर वापस आ गए, और रात्रि भोजन करके सो गए, फिर सुबह उठकर हमने मेट्टूपलायम तक वापसी के समय उदगमंडलम यानी ऊटी स्टेशन से जो नेरोगेज लाईन की हेरिटेज ट्रेन चलती है उसमें सवार होकर मेट्टूपलायम स्टेशन तक आए, रास्ते में हमने देखा की बहुत घने जंगलों से होते हुए वह ट्रेन आ रही थी बहुत ही अद्भुत नजारा था पहाड़, चाय के बागान आदि का मनोरम दृश्य देखते ही बनता था। रास्ते में ट्रेन कुन्नूर, वेलिंगटन, अरुवंकाडु, केट्टी और लवडेल आदि स्टेशनों पर रुकती है। लगभग 4 घंटे में हम मेट्टूपलायम स्टेशन पहूंच गए वहां से हमारी ट्रेन रात 9:20 बजे थी तो हम 7:00 बजे वहां पहूंच गए हमने वहां पर डोसा खाया और नीलगिरी एक्सप्रेस में बैठकर चेन्नई के लिए रवाना हुए। अगले दिन सुबह चेन्नई वापस आ गए, यह वाकई एक अविस्मरणीय यात्रा थी जिसमें हमने बहुत आनंद उठाया।

भावनाओं की परिषद्: कौन करता है दिल पर राज़?

सुश्री विजयलक्ष्मी शंकर
सहायक लेखा अधिकारी

एक जगह है जहाँ भावनाएँ इकट्ठा होती हैं।—पर हमेशा हमारे भीतर मौजूद ,अनदेखी—
कभी फुसफुसाती हैं, कभी टकराती हैं, तो कभी चुपचाप सुनती हैं।
वहीं— दिल की पुकार पर ,एक दिन सभी भावनाएँ एकत्र हुईं ,
मानव हृदय ने उन्हें बुलाया।

दिल ने पूछा—
"बताओ, अगर तुम में से सिर्फ एक ही भावना बच सकती हो... तो वो कौन होगी?"
और इसी सवाल से शुरू हुई वो बहस लेकिन हर किसी ने ,जो कभी किसी ने सुनी नहीं—
सूस जरूर की है।मह

सबसे पहले बोली ख़ुशी।
वो मुस्कान बिखेरती हुई बोली,
"मेरे बिना जीवन कैसा? मैं ही तो वह हँसी हूँ जो आँसुओं के बाद आती है, वो उजाला जो अंधेरे के बाद चमकता है। लोग तो मेरे लिए जीते हैं!"
उसकी बातों में चमक थी लेकिन सब सहमत नहीं थे।—

फिर आई उदासी।
धीमे स्वर में,गहरी आँखों से बोली ,
"खुशी, तुम्हारी अहमियत तभी समझ में आती है जब मैं साथ होती हूँ। मैं कोई कमजोरी नहीं —मैं वो गहराई हूँ, जिससे इंसान खुद को पहचानता है। मैं चुप रहकर भी बहुत कुछ कहती हूँ।"

गुस्सा जोश से उठा।
वो मंच पर आया जैसे तूफ़ान।
"मैं वो आग हूँ जो अन्याय के ख़िलाफ़ भड़कती है! मैं बदलाव लाता हूँ। मैं चुप नहीं रह सकता —मैं बदलाव करता हूँ!"
उसकी आवाज़ में क्रांति थी और एक डर भी।—

डर काँपता हुआ आया।
"ग़ुस्सा, तुम ज़रूरत से ज़्यादा जला डालते हो। मैं ही हूँ जो लोगों को सुरक्षित रखता हूँ। मैं वो चेतावनी हूँ जो उन्हें बचाती है। मैं नहीं रहूँ, तो लोग गलती दोहराएँगे।"

फिर उठी मोहब्बत।
मंच पर उसके आते ही शांति छा गई।
*"मैं वो बंधन हूँ जो सबको जोड़ता है। माँ की ममता, मित्र की बाँहें, वो धड़कन जो कहती है — 'तुम अकेले नहीं हो।' मैं हूँ, तो तुम सबका होना भी मतलब रखता है।"
वो सबसे शांत थी लेकिन उसकी बातों में सबसे ज़्यादा वज़न था।—

? उम्मीद आई और धीमे से मुस्कुराई।
"जब बाकी सब छोड़ देते हैं... मैं तब भी बनी रहती हूँ।
मैं वो किरण हूँ जो अंधेरे में टिमटिमाती है। मैं कहती हूँ मैं 'एक बार और कोशिश करो।'—
मैं टिकाऊ—कमज़ोर नहीं हूं"ँ।

और अंत में आई अपराधबोध।
भारी आवाज़ में बोली,
"मैं अच्छी नहीं लगती —लेकिन मैं इंसानों को अच्छा बनाती हूँ। मैं उन्हें सच्चाई दिखाती हूँ। मैं वो दर्द हूँ जो उन्हें सुधारने के लिए मजबूर करता है। मेरे बिना कोई सीख नहीं होती।"

बातें बढ़ने लगींबहस गर ,म हुई।
हर भावना खुद को सबसे महत्वपूर्ण मानती थी।
लेकिन तभीदिल ने सबको चुप किया। ...

और दिल ने कहा:
"तुम सब ज़रूरी हो।

खुशी मुझे रोशन करती है।
उदासी मुझे गहरा बनाती है।
ग़ुस्सा मुझे हिम्मत देता है।
डर मुझे सुरक्षित रखता है।
अपराधबोध मुझे सजग करता है।
उम्मीद मुझे आगे बढ़ाती है।
लेकिन...
मोहब्बत —तुम मुझे अर्थ देती हो।

सीख जो हम सबके लिए है

हम सब इन भावनाओं से बने हैं।
कभी हम खुशी ढूँढते हैं, कभी डर से भागते हैं, कभी ग़ुस्से में खो जाते हैं, कभी अपराधबोध से टूटते हैं।
लेकिन एक बात याद रखें:
जब दिल टूटा हो —उम्मीद थामे।
जब ग़लती हो —अपराधबोध से सीखे।
जब डर लगे —सावधान रहें।
जब ग़ुस्सा आए —उसे दिशा दें।
जब उदासी छाए —उसे महसूस करें।
और जब ख़ुशी मिले —उसे खुलकर जिएँ।

पर हर भावना के बीच...
मोहब्बत को आगे रखिए।

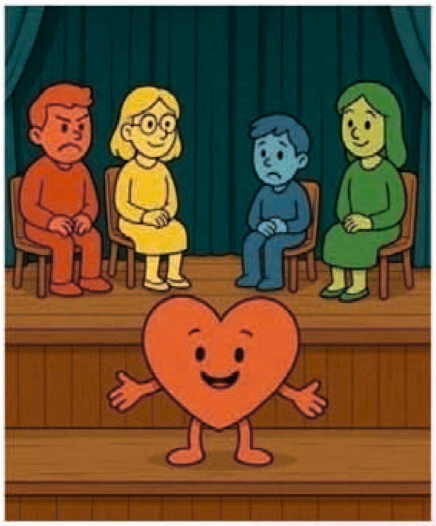

क्योंकि मोहब्बत अकेले सब कुछ नहीं हैलेकिन सब कुछ ...
उसी से जुड़ा है।
और यही हमें इंसान बनाता है।

बिहार के पहले मुख्यमंत्री (प्रधानमंत्री)

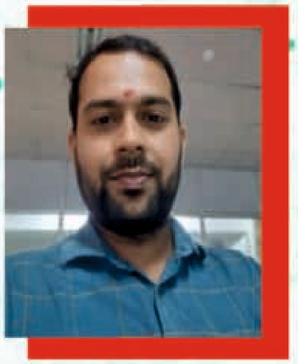

श्री दिव्यांशु
आशुलिपिक श्रेणी 2

डॉ. श्रीकृष्ण सिंह - बिहार के पहले मुख्यमंत्री
नामः डॉ. श्रीकृष्ण सिंह
जन्मः 21 अक्टूबर 1887, नवादा जिला, बिहार
मृत्युः 31 जनवरी 1961
पदः बिहार के पहले मुख्यमंत्री (पूर्व में प्रधानमंत्री के रूप में जाना जाता था)
कार्यकालः 20 जुलाई 1937 – 31 जनवरी 1961 (कुछ समय का अंतराल छोड़कर)
राजनीतिक दलः भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

डॉ. श्रीकृष्ण सिंह का जन्म **21 अक्टूबर 1887** को बिहार के **नवादा जिले** के मौर गांव में हुआ था। वे एक मध्यमवर्गीय कायस्थ परिवार से थे। बचपन से ही वे मेधावी छात्र थे और शिक्षा में विशेष रुचि रखते थे। उन्होंने **पटना कॉलेज** और फिर **पटना लॉ कॉलेज** से शिक्षा प्राप्त की। कानून की पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने वकालत शुरू की, लेकिन जल्द ही देशसेवा की भावना से प्रेरित होकर स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय हो गए।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम और स्वतंत्र भारत के निर्माण में अनेक नेताओं ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। बिहार के पहले मुख्यमंत्री डॉ. श्रीकृष्ण सिंह, जिन्हें सम्मानपूर्वक "श्री बाबू" कहा जाता है, ऐसे ही महान स्वतंत्रता सेनानी, कुशल प्रशासक और दूरदर्शी नेता थे। उन्होंने न केवल बिहार को विकास के पथ पर अग्रसर किया, बल्कि भारतीय राजनीति में भी अपनी अमिट छाप छोड़ी।

श्रीकृष्ण सिंह ने महात्मा गांधी के नेतृत्व में चलाए गए असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय भाग लिया। वे बिहार में कांग्रेस के प्रमुख नेताओं

में से एक बन गए। उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा। उनका जीवन त्याग, संघर्ष और सच्चाई का प्रतीक बन गया।

भारत के स्वतंत्र होने से पहले ही 1937 में हुए प्रांतीय चुनावों में कांग्रेस को जीत मिली और श्रीकृष्ण सिंह **बिहार के पहले प्रधानमंत्री** (उस समय मुख्यमंत्री को प्रधानमंत्री कहा जाता था) बने। आज़ादी के बाद वे 1946 में दोबारा मुख्यमंत्री बने और यह पद **31 जनवरी 1961** तक निभाया।

श्री बाबू की छवि एक **ईमानदार, कठोर लेकिन न्यायप्रिय प्रशासक** की थी। वे भ्रष्टाचार के सख्त विरोधी थे और शासन में पारदर्शिता के पक्षधर थे। वे सादा जीवन और उच्च विचार में विश्वास रखते थे। उनका जीवन स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे के मूल्यों से प्रेरित था।
उनका कार्यकाल कई मायनों में ऐतिहासिक रहा। उन्होंने बिहार में **जमींदारी प्रथा** को समाप्त किया और **भूमि सुधार** लागू किए। उन्होंने उद्योगों, शिक्षा और बुनियादी ढांचे के विकास को प्राथमिकता दी। **बिहार विश्वविद्यालय, आईआईटी पटना** (तत्कालीन संस्थानों की नींव), और कई तकनीकी संस्थानों की स्थापना उनकी दूरदर्शिता का परिणाम है।

31 जनवरी 1961 को डॉ. श्रीकृष्ण सिंह का निधन हुआ। उनके निधन से बिहार ने एक महान सपूत को खो दिया। आज भी राज्य भर में उनके नाम पर कई संस्थान, सड़कों और योजनाओं का नामकरण किया गया है।

डॉ. श्रीकृष्ण सिंह न केवल बिहार के पहले मुख्यमंत्री थे, बल्कि वे एक **दूरदर्शी नेता, समाज सुधारक और सच्चे राष्ट्रभक्त** थे। बिहार के विकास की नींव जिन सिद्धांतों पर पड़ी, उसमें श्री बाबू का योगदान अमिट और अविस्मरणीय है।

काबिलियत

श्री मुकेश कुमार
डीईओ

एक बार कि बात है, हमारे तरफ एक मुखिया जी थे वे एक पुरे पंचायत में जनता दरबार लगाते थे। मुखिया जी के बहुत सारे चमचे भी थे। जिस में से एक चमचा केशव बहुत तेज था, उसके पास हर समस्या का समाधान था। वह जनता की समस्या का समाधान चुटकी बजाते ही करता था। और मुखिया जी बिना केशव से पूछे कोई बड़ा फैसला नहीं लेते थे। लेकिन इस चमचे से पूरे पंचायत के लोग जलते और दुखी रहते थे क्योंकि मुखिया जी केशव की हमेशा तरफदारी करते थे। मुखिया तक बाकि पंचायत की बातें पहुँच नहीं पाती थी। एक बार, किसी भी तरह से बाकियों की आवाज मुखिया जी तक पहुँची। तो मुखिया जी ने एक दिन जनता दरबार में अपने चमचे से कहा, तुम इतने बुद्धिमान हो लेकिन तुम्हारा बच्चा तो बहुत मूर्ख है। मुखिया जी कि ये बात चमचे को अच्छी नहीं लगी।

चमचा ने मुखिया जी से पूछा- मुखिया जी आप ऐसे क्यों बोल रहे है? आखिर आपको ऐसा क्यों लगता है कि मेरा बेटा मूर्ख है!

मुखिया जी ने कहा - मैं रोज सुबह जब जनता से मिलने जाता हूँ तो वहाँ पर तुम्हारा बेटा भी होता है और मैंने तुम्हारे बेटे से पूछा कि अकल बड़ी या भैंस? तो तुम्हार बेटा कहता है – भैंस। तो मैं समझ गया कि ये मूर्ख है।

इसके अलावा मैं उससे रोज एक ही प्रश्न पूछता हूँ कि सोना और चाँदी में कौन सी चीज महंगी है। और उसका जवाब चाँदी ही होता है।

मुखिया जी की यह बात सुनकर वहाँ पर मौजूद लोग चमचे पर हँसने लगे और चमचे को बुरा लगा। चमचा बिना कुछ कहे अपने घर वापस लौट आया। घर आते ही -

चमचे ने अपने बेटे से पूछा कि सोना और चाँदी में क्या मूल्यवान है?

बेटे ने फौरन जवाब देते हुए कहा - पिताजी सोना।

चमचे ने बेटे से कहा- तुम्हें जब पता है कि कीमती धातु सोना है तो तुम क्यों मुखिया जी को गलत जवाब देते हो। और कीमती धातु चाँदी बताते हो।

बेटे ने कहा- पिताजी मुखिया जी रोज सुबह जनता से मिलने आते हैं और रोज मुझे बुलाकर मेरे सामने दो सिक्के रखते है, जिसमे से एक चांदी का होता है और एक सोना का सिक्का होता है। सिक्का रख कर मुखिया जी मुझसे पूछते है कि जो इन देनों में से ज्यादा कीमती है उसे तुम ले जाओ और मैं रोज चाँदी का सिक्का उठा लेता हूँ। ये देख कर मुखिया जी हँसने लगते है और वहाँ से चले जाते है।

चमचे ने अपने बेटे से पूछा - तुम क्यों रोज चाँदी का सिक्का उठाते हो सोना क्यों नही उठाते? अब पूरी जनता देखो मेरा मजाक उड़ा रहे हैं।

चमचे कि बात सुनकर बेटा बोला - पिता जी आप थोड़ा अंदर आइये और कमरे में ले गया और वहाँ पर उसने एक पेटी खोली, तो पिता ने देखा पेटी पूरा चाँदी के सिक्के से भरी हुई है इतनी सारी चाँदी देखकर चमचा हैरान हो गया।

बेटे ने कहा - पिताजी, जो सिक्के मुखिया जी मुझे देते थे ये सब वही है, जिस दिन मुखिया जी को सही उत्तर दे देते तो मुखिया जी मुझसे ये सवाल पूछना बंद कर देते और मुझे रोज एक सिक्का मिलना बंद हो जाता। ऐसा होने से मेरा नुकसान हो जाता।

उसके ठीक अगले दिन चमचे ने अपने बेटे कि काबिलियत मुखिया जी को बताई और मुखिया जी चमचे के बेटे की चालाकी से बेहद ही प्रभावित हुआ।

हमे इस कहानी से यही सीख मिलती है कि हमें अपनी काबिलियत का बखान नहीं करना चाहिए, समय आने पर अपने आप ही सबको पता चल जाएगा कि आप कितने काबिल है।

रामेश्वरम की यात्रा

श्री शशिकान्त कुमार
लेखाकार

यकायक एकदिन मेरे मन में रामेश्वरम की यात्रा का विचार कौंधा। मैं और मेरे एक दोस्त से बातकर रामेश्वरम की यात्रा की तैयारी शुरू कर दी। किसी भी जगह में जाने से पूर्व रहने की व्यवस्था करनी होती है ताकि वहाँ जाने पर कमरा खोजने की तकलीफ न हो। इसीलिए हमने सबसे पहले रामेश्वरम होलीडे होम की बुकिंग कर ली। इसके बाद यात्रा संबंधी सामान एवं रेल टिकट जो उस समय यानी 2019 में मडपम तक ही जाती थी। ऐसा इसीलिए क्यों कि उस समय पम्बन ब्रीज को बनाने का कार्य चल रहा था।

हम अपनी यात्रा अपनी पत्नी और बच्चे के साथ करने का निश्चय किया था। इसीलिए सभी ने अपने-अपने सामान की पैकिंग शुरु कर दी। सभी बड़े उत्साहित दिख रहे थे। हमने चेन्नई एग्मोर से मडपम के लिए ट्रेन ली और सुबह वहां पहुँच गये। रामेश्वरम की यह मेरी पहली यात्रा थी।

रामेश्वरम जो रामनाथपुरम जिला में स्थित है। जो हिन्दुओं की सबसे पवित्र चार धाम यात्रा में से एक है। यह मदुरै से 170 km की दूरी पर स्थित है। अग्नि तीर्थ वहाँ पर सबसे पहले स्नान करना होता है। यह माना जाता है कि जब प्रभु श्री राम रावण का वध किये थे तो यहीं पर प्रभु श्री राम ने स्नान किया था तथा यह भी मान्यता है कि यहाँ पर समुद्र की लहरे शांत रहती है, क्योंकि प्रभु श्री राम ने इसे छु कर शांत कर दिया था। अग्नि तीर्थ में स्नान कर हम 100 मीटर की दूरी पर स्थित मुख्य मंदिर में प्रवेश के लिए कतार में खड़े हो गए। वहाँ 25 रुपए एंट्री फी है, जो 22 कुण्ड में स्नान के लिए लिया जाता है। वहाँ हर कुण्ड के पास स्नान कराने के लिए एक कर्मचारी रखा गया है जो हमें स्नान करने में सहायता करता है। पूरे 22 कुण्ड में स्नान करने में 40 मिनट लग गये थे। स्नान के बाद मुख्य मंदिर में प्रवेश हेतु कतार में खड़े हो गए।

यहाँ पर हमने दो शिवलिंग देखा। पहला शिवलिंग जो हनुमान जी कैलाश लाये थे और दुसरा जो माता सिता ने रेत से निर्मित किया था। एक-एक करके दोनों शिवलिंग के दर्शन हुए। मंदिर के दीवारों पर सुंदर कलाकृतियां की गई है। सभी दीवार दिखने में तो एक जैसे है पर यदि हम गौर से देखे तो उसमें भिन्नता दिखाई देती है। यह भारत का सबसे लम्बा कॉरीडोर है जो पत्थरों से निर्मित है। पर उतना ही आकर्षित और सुन्दर है।

मंदिर परिसर में ही अनेक माताओं का मंदिर है जैसे- अम्बिका माता का मंदिर, पार्वती माता का मंदिर। इसके अलावा हनुमान जी का मंदिर के भी दर्शन हुए। मंदिर में सुबह 11 बजे से दोपहर के 3 बज तक भंडारा की भी व्यवस्था है। पर इतना घुमने के बाद शरीर को आराम की आवश्यकता महसुस हुई। इसीलिए हम सभी अपने रूम की तरफ रवाना हुए, वही कैंटीन का खाना खाया और आराम किए।

इसके बाद हम पंचमुखी हनुमान मंदिर(विशाल रूप), नाभवु नायान्गी(माता पार्वती) के मंदिर गए। नाभवु नायान्गी मंदिर की यह मान्यता है कि जिनलोगों को संतान की प्राप्ती की कामना लेकर आते है यहाँ उन्हें संतान की प्राप्ती का आशीर्वाद मिलता है। इसके बाद हम साक्षी हनुमान मंदिर गए जो मुख्य मंदिर से दो कि.मी. की दुरी पर है। इसके बाद हम कलाम स्मारक गए। इस जगह को अब्दुल कलाम मेमोरियल के नाम से जाना जाता है। इसके बाद हम सभी अपने रूम की तरफ रवाना हुए, वही कैंटीन में खाना खाया और आराम किए।

अगले दिन धनुषकोटी जाने की तैयारी करने लगे। धनुषकोटी एक पुल है जो श्रीराम जी ने लंका पर चढ़ाई या लंका जाने के लिए बनाया था, क्यों कि लंका चारों तरफ से समुंद्र से घिरा हुआ है। श्रीराम को अपनी सेना सहित लंका पहूंचने के लिए समुद्र पार करना था। इसलिए श्रीराम समुद्र तट पर कुशा बिछाकर जप करके समुद्र की अनुनय-विनय शुरू की। हालांकि, इसी प्रकार उपासना करते 3 रातें बीत गईं, लेकिन समुद्र ने अपने आधिदैविक रूप का दर्शन उन्हें नहीं कराया।उन्होंने निश्चय किया, 'आज या तो मैं समुद्र के पार जाऊंगा या मेरे द्वारा समुद्र का संहार होगा.' तब श्रीराम समुद्र पर पहली बार कुपित हुए। श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण के युद्धकाण्ड में वो प्रसंग इस प्रकार है-

"समुद्र ने जब श्रीराम के समक्ष अपना रूप प्रकट नहीं किया तो श्रीराम ने गंभीर स्वर में लक्ष्मण से कहा- 'लगता है समुद्र को बड़ा अहंकार है। शान्ति, क्षमा, सरलता और मधुर भाषा की बात उसे समझ नहीं आती। आज मैं इसे विक्षुब्ध कर दूंगा। ये तो हठी है, इसे सुखा डालूंगा। फिर हम सब यहीं से पैदल लंकापुरी जा सकेंगे"।

और श्रीराम ने बाण उठा लिया, प्रभु श्री राम के बाण उठाते ही समुद्र देव प्रकट हुए। समुद्र देव हाथ जोड़कर विनती करने लगे भगवन हमें माफ कर दीजिए। हमपर कृपा करें हमें न सुखाए। श्रीराम समुद्रदेव से वह उपाय पूछते हैं जिससे उसकी मर्यादा बनी रहे और वानरसेना समुद्र पार कर जाय। तब समुद्रदेव बताते हैं कि उनकी सेना में नल और नील नामक दो भाई हैं। वे बचपन में काफी शरारती थे। वे ऋषियों मुनियों की पूजा वस्तुऐं नदी में फैंक आते थे। तब एक सिद्ध ऋषि ने उन्हें श्राप दिया कि वो अपने हाथ जो वस्तु पानी में फैंकेंगे, वह वस्तु कभी डूबेगी नहीं। समुद्रदेव कहते हैं कि यह श्राप अब आपके लिये वरदान साबित होगा। नल भगवान विश्वकर्मा का औरस पुत्र होने के नाते शिल्पकला भी जानता है। यदि दोनों भाई अपने हाथ से समुद्र में पत्थर डालें तो लंका तक सेतु बन जायेगा। भगवान राम समुद्र देवता की बात सुनकर उन्हें क्षमा कर देते हैं। लेकिन क्रोध में निकाले गए ब्रह्मास्त्र को वापस नहीं रख सकते थे। तब उन्होंने समुद्र देवता से पूछा कि अब तो ये बाण कहीं न कहीं छोड़ना ही पड़ेगा। इस पर समुद्र देवता उन्हें द्रुमकुल्य नाम के देश में बाण छोड़ने का सुझाव देते हैं। समुद्र देवता का कहना था कि द्रुमकुल्य पर भयंकर दस्तु (डाकू) रहते हैं जो उनके जल को भी दूषित करते रहते हैं। इस पर राम ने ब्रह्मास्त्र चला दिया। वाल्मीकि रामायण में दिए गए वर्णन के अनुसार ब्रह्मास्त्र की गर्मी से द्रुमकुल्य के डाकू मारे गए। लेकिन इसकी गर्मी इतनी ज्यादा थी कि सारे पेड़-पौधे सूख गए और धरती जल गई। इसके कारण पूरी जगह रेगिस्तान में बदल गई और वहां के पास मौजूद सागर भी सूख गया। यह वर्णन बेहद आश्चर्यजनक है और जिस तरह से लंका तक बनाए गए रामसेतु को भगवान राम की एतिहासिकता के सबूत के तौर पर माना जाता है उसी तरह इस घटना को भी सही माना जाता है।

माना जाता है कि यह पुल जो समुद्र पर बना है उसे बनाने में मात्र 5 दिन का समय लगा था। इस पुल से लंका 48 कि.मी. की दुरी पर है। यह कथा रामायण के युद्धकाण्ड कुछ इस प्रकार वर्णित है।

अति उतंग गिरि पादप लीलहिं लेहिं उठाई।
आनि देहि नल नीलरि रचहिं ते सेतु बनाई।।

अर्थात् बानर और भालू ऊँचे-ऊँचे पर्वतों और पेड़ों को उखाड़कर लाते और नल-नील को देते जो उन्हें गढ़कर सुंदर सेतु का निर्माण करते थे।

इसका वर्णन न केवल रामायण तक बल्कि स्कंद पुराण, विष्णु पुराण, अग्नि पुराण में भी सुनने को मिलता है। इसमें इसका नाम रामसेतु या नलसेतु का नाम दिया गया है। रामसेतु जिसे एडम्स ब्रिज भी कहा जाता है। इस्लामिक परम्परा में जब हजरत को स्वर्ग से निष्काषित किया गया तो यह माना जाता है कि उन्होंने श्रीलंका के आदम चोटी पर कदम रखा। प्राचीन स्त्रोतों के अनुसार श्रीलंका से भारत आने के लिए उन्होंने एक पुल का प्रयोग किया जिसे बाद में एडम ब्रिज के नाम से जाना जाता है।

माना जाता है कि 15 वीं शताब्दी तक रामसेतु समुद्र तल से उपर था, और लोग इसे पैदल पार कर सकते थे। लेकिन 1480 ई. में आई एक भंयकर चक्रवात ने इस सेतू को पूरी तरह क्षतिग्रस्त कर दिया। और तब से यह समुद्र में डूब गया।

मैं बढ़ा ही जा रहा हूं

श्री शिव जी पांडे
वरिष्ठ लेखाकार

मैं बढ़ा ही जा रहा हूं
पर तुम्हें भुला नहीं हूं
चल रहा हूं चलने से थकावट दूर नहीं होती
जल रहा हूं जलने से घमंड चूर नहीं होती
घुट रहा हूं क्योंकि आसान सा बोझ हो जाता हृदय का
डूब रहा हूं क्योंकि ढकलेने को साथ पा जाता समय का
मांगता तो था की क्षण भर रुक जाउ तुम्हारे लिए
किंतु अनगिनत स्वर बुलाते है मुझे बाहे पसार के
सुना सुनी करने उन्हें भारी परिभाषा का सस्ता
चेहरा दिखाने योग्य रखेगी।
न मुझको स्वार्थ में बोलता हूं
आज युग की देहली को लांघकर मैं रास्ता नया अपना रहा हूं
पर तुम्हें भुला नही हूं
याद है-
कब तक ये रुकेगी घड़ी
संक्रमण और संसार में अमर है
भुख मन की संसार वेदना केवल कहानी ही नहीं है।
एक जलता सत्य केवल आँख का पानी ही नही है।
शांति कैसी छा रही संसार में उदासी
भुख कैसी रो रही
सारी धरा ही आज प्यासी –
ध्यान तक विश्राम का महान पथ अनर्थ होगा।
कर्ज युग न दे सका तो जन्म लेना व्यर्थ होगा।
इसलिए ही आज युग की आग अपने राग में
घर नित नया गा रहा हूं
पर तुम्हें भूला नहीं पा रहा हूं।

सोचता हूं कवि क्या दे गए है
हमें धन जीवनी की वेदना से फट गई थी।
हाय हृदय जब की पक्षी की व्यथा से कवि का अंतर आ गया है।
सीख केजे न दे मानव कंकाल जर्जर है।
आदमी और कवि में बड़ा कोई न अंतर है।
मन की व्यथा को शांत कर अनुभव के स्वर जगा दे।

वेदना अनुभव कैसे करे कैसे कहे
लौट कर सब आएंगे,
सिर्फ वह नहीं आएगा जो समय पर आता था।
अगर आया भी होगा तो वही नहीं होगा,
जो कि धरती पर समा भी होगा, मैं तो
कहता हूं कि सारी दुनियां
में उदासी छा जाती हैं
मगर मैं क्या करूं सारी दुनिया में उदासी छा जाती है,
मैं बढ़ा ही जा रहा हूं
तुम्हें भूला नहीं हूं,
वादा तो किया था मैं सादगी को पहचान बना दूं
सरिता को बाग बना दूं
पहचान छिपा कर नाम बदल दूं
तुम सरिता का संसार सागर हैं फिर भी मैं अरमान का पानी तू दरियाँ हैं
मैं छाया का पानी कैसे कहुं मैं बढ़ा ही जा रहा हूं
तू जगत की प्यारी से राह पर बैठी सरिता का सागर है।

प्राकृतिक सौंदर्य और संरक्षणः हमारी जिम्मेदारी

सुश्री अंजिता अमन
आशुलिपिक

प्राकृतिक सौंदर्य न केवल हमारे जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाता है, बल्कि यह हमारी आत्मा को भी शांति और सुकून प्रदान करता है । आज जब दुनिया भर में विकास की दौड़ तेज हो पर्यावरण पर इसका गहरा असर दिखाई दे रहा है । वनों की कटाई, जलवायु परिवर्तन , प्रदूषण जैव विविधता में कमी ये सभी समस्याएँ प्राकृतिक संतुलन को बिगाड़ रही हैं । ऐसे में हम सभी का कर्तव्य बनता है कि हम पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझें और इसे बचाने लिए ठोस कदम उठाएं ।

प्राकृतिक सौंदर्य का महत्व- प्राकृतिक सौंदर्य, चाहे वह हरे भरे जंगल हों, सफेद बर्फ से ढके पहाड़, अथवा नीले आकाश के नीचे बहती नदियाँ, हमारी मानसिक शांति और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। यह सौंदर्य हमारे जीवन को सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करता है और हमें तनाव, चिंता और अन्य मानसिक समस्याओं से राहत दिलाता है। प्राकृतिक स्थलों की सुंदरता न केवल पर्यटकों को आकर्षित करती है, बल्कि यह स्थानीय समुदायों के लिए आजीविका का भी स्रोत बन सकती है। इसलिए, इन क्षेत्रों का संरक्षण करना और प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए।

पर्यावरण संकट और उसके प्रभाव- विकास के साथ-साथ बढ़ते हुए प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन, पर्यावरण संकट को जन्म दे रहे हैं। ग्लोबल वार्मिंग के कारण पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है, जिसके परिणामस्वरूप मौसम के पैटर्न में बदलाव आ रहा है, समुद्र स्तर बढ़ रहा है, और कई जीव - जंतुओं की प्रजातियाँ संकट में पड़ रही हैं। रसायनिक इसके अलावा, वनों की कटाई, नदियों का प्रदूषण और जमीन का रासायनिक उपयोग जैव विविधता के संकट को और गहरा कर रहे हैं। इन समस्याओं से न

केवल प्राकृतिक संसाधन समाप्त हो रहे हैं, बल्कि हमारे लिए जीवन के बुनियादी तत्व भी संकट में हैं, जैसे पानी, हवा और खाद्य सुरक्षा।

पर्यावरण संरक्षण के उपाय – 1. **वृक्षारोपण अभियान** - पेड़-पौधों का संरक्षण और वृक्षारोपण हमारी पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। पेड़ न केवल ऑक्सीजन प्रदान करते हैं, बल्कि यह भूमि को ठंडा रखने, जलवायु को नियंत्रित करने और पर्यावरण को शुद्ध करने में भी मदद करते हैं। 2. **जलवायु परिवर्तन पर ध्यान दें**- हमें अपनी जीवनशैली में बदलाव लाने की आवश्यकता है । ऊर्जा की खपत को कम करने, सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा जैसे वैकल्पिक स्रोतों का उपयोग बढ़ाने और सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करने से जलवायु परिवर्तन को रोका जा सकता है। 3. **प्रदूषण कम करें** - प्लास्टिक का उपयोग कम करें और पुनः उपयोग योग्य सामग्री का चयन करें। इसके अलावा, जल और वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए उद्योगों और शहरों में उचित प्रबंधन की आवश्यकता है। 4. **जैव विविधता का संरक्षण**- जैव विविधता को बनाए रखने के लिए प्राकृतिक आवासों की रक्षा करनी चाहिए । प्रजातियों का विलुप्त होना केवल जैविक विविधता को नुकसान नहीं पहुंचाता, बल्कि यह संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र को भी प्रभावित करता है। 5. **शिक्षा और जागरुकता** - पर्यावरण संरक्षण के महत्व को समाज के हर वर्ग में फैलाना निष्कर्ष - जरूरी है। विद्यालयों, विश्वविद्यालयों और समुदायों में पर्यावरणीय शिक्षा और जागरूकता बढ़ाने के लिए कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं। प्राकृतिक सौंदर्य केवल हमारी आंखों को ही नहीं, बल्कि हमारे दिल और आत्मा को भी संतुष्ट करता है। इस सुंदरता और पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण के लिए हमें सभी मिलकर काम करना होगा। यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ और सुरक्षित पर्यावरण छोड़ कर जाएं। इसलिए, आइए हम सभी इस पृथ्वी के प्रति अपने कर्तव्यों को समझे और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में ठोस कदम उठाएं। प्राकृतिक सौंदर्य और पर्यावरण का संरक्षण केवल हमारा नैतिक कर्तव्य नहीं बल्कि एक आवश्यकता बन चुकी है। इसे बचाए रखना, हमारे जीवन और भविष्य दोनों के लिए अत्यंत आवश्यक है ।

हमारे कार्यालय के खिलाड़ियों की उपलब्धियाँ

श्रीमती जे. शार्लोट देवप्रिया, सहायक लेखा अधिकारी, कार्यालय, प्रमले (ले. व ह.), तमिलनाडु ने अप्रैल 2024 में चेन्नई रनर्स के साथ मैराथन के लिए प्रशिक्षण शुरू किया, काउच टू 5Kग्रीष्मकालीन कार्यक्रम।

श्रीमती जे. शार्लोट देवप्रिया, सहायक लेखा अधिकारी - कार्यालय, प्रमले (ले. व ह.), तमिलनाडु

1. लेखापरीक्षा सप्ताह के दौरान आयोजित महिला वर्ग की 5 किमी दौड़ में विजेता। नवंबर 2024 में तमिलनाडु के माननीय स्वास्थ्य मंत्री मा. सुब्रमण्यम से उन्हें 2500 रुपये का नकद पुरस्कार, एक पदक और एक प्रमाण पत्र मिला।

2. सितंबर 2024 में भारतीय प्लंबिंग एसोसिएशन द्वारा आयोजित नीराथॉन में 50+ आयु वर्ग की महिला श्रेणी में 10 किमी दौड़कर तीसरा स्थान प्राप्त किया। पदक, प्रमाण पत्र और 5000 रुपये का नकद पुरस्कार जीता।

3. अगस्त 2025 में एक्सएल रनथॉन 2025 में 50+ महिला श्रेणी में दूसरा स्थान प्राप्त किया। पदक, ट्रॉफी और एक प्रमाण पत्र जीता।

4. जुलाई 2025 में आउटर रिंग रोड पर रोलिंग रन 2025 में हाफ मैराथन (21.1 किमी) 3 घंटे 4 मिनट में पूरी की।

अब तक 5 किमी, 10 किमी और 21.1 किमी की 15 स्पर्धाएँ पूरी कर चुकी हैं।

श्री क्रिस्टोफर ए. अनस, सहायक लेखा अधिकारी, कार्यालय, पीएजी (लेखा एवं हकदारी), तमिलनाडु ने अप्रैल 2024 में चेन्नई रनर्स के साथ मैराथन के लिए प्रशिक्षण शुरू किया, काउच टू 5 ग्रीष्मकालीन कार्यक्रम।

श्री क्रिस्टोफर ए. अनस, सहायक लेखा अधिकारी ने रोलिंग रन 2025 में जुलाई 2025 में आउटर रिंग रोड पर हाफ मैराथन (21.1 किमी) 3 घंटे 3 मिनट में और 5 किमी, 10 किमी और 21.1 किमी में 15+ स्पर्धाओं में पूरी की।

हिंदी पखवाड़ा 2025 की झलकियाँ

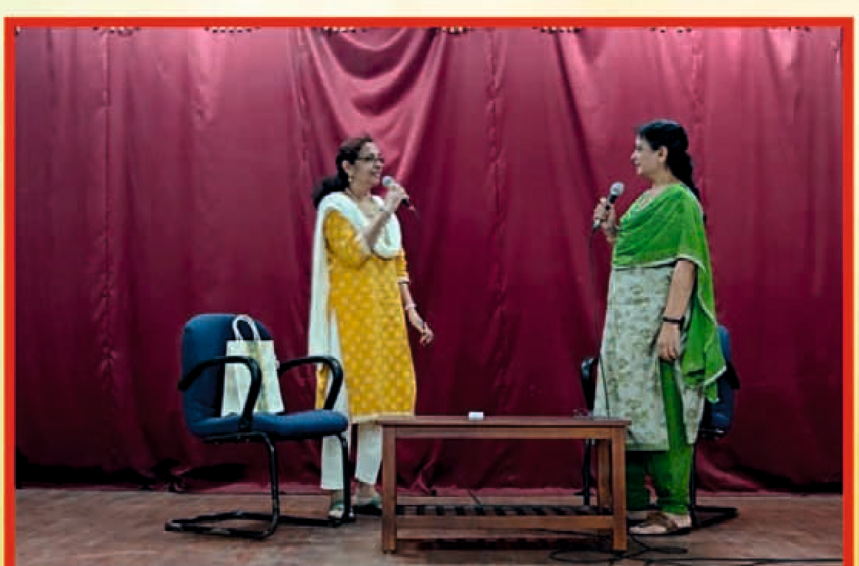

हिंदी पखवाड़ा 2025 की झलकियाँ

कल्याण गतिविधियां

1. सेवा निवृत्ति समारोह

2. खेल में उपलब्धी

अमृत अंक 33 वां का विमोचन

हिंदी पखवाड़ा 2024 का समापन समारोह